हिन्दी-पुस्तक-माला संख्या १२

स्वराज्य

लेखक—

श्रीयुत शिवदानप्रसाद सिंह, बी० ए०, डी. एस. सी.

प्रकाशक—

हिन्दी-ग्रन्थ-भण्डार कार्यालय,

बनारस सिटी।

वि० १९७८

प्रथम बार] [मूल्य ।=)

प्रकाशक—
हिन्दी ग्रन्थ-भण्डार कार्यालय,
बनारस सिटी।



मुद्रक—
दुर्गाप्रसाद वर्मा,
आदर्श प्रेस, सप्तसागर,
बनारस सिटी।


उपहार !
भवदीय —

हिन्दी-पुस्तक-माला का—

१३वां अंक

राष्ट्रीय-जगत् और भारत-गगन के सात समुज्ज्वल नक्षत्रों का

सम्यक दर्शन कराने वाला, सचित्र

सप्तर्षि

'युगान्तर' के सम्पादक और कई ग्रन्थों के लेखक

श्रीयुत शिवदास गुप्त 'कुसुम'

लिखित

शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

समर्पण।

यह छोटी पुस्तक अत्यन्त प्रेम और आदर पूर्वक श्रीमान् पंडित जवाहिर लाल नेहरू साहब के करकमलों में समर्पित की जाती है। आपका अपूर्व स्वार्थत्याग, देश-सेवा, स्वराज्य प्रति कठिन उद्योग तथा अदम्य उत्साह, इन प्रान्तों के लोगों से छिपा नहीं है। ऐसे ही महानुभावों की महान तपस्या से कठिन से कठिन कार्य शीघ्र सभाप्त हो जाते हैं। स्वराज्य प्रति श्रीमान् की अद्भुत सेवाओं के उपलक्ष में यह 'स्वराज्य' सादर आपकी भेंट है। आशा है कि आप इसे कृपापूर्वक स्वीकार करेंगे।

विनीत—

शिवदानप्रसाद सिंह।

सूची।

चित्र-परिचय ।



देश में धूम मच रही है मेरे जोगी की,

वतन पै, गेरुश्रा कफनी रंगाये फिरता है ।

हमारे ठाकुरद्वारे की वह पावन-मूर्ति है । हमारी पूजा का वह इष्टदेव है । हमारे राष्ट्र का वह प्रकाश है । जो आज देशभर में प्यारा कन्हैया सा पुज रहा है । वह जिधर घूम पड़ता है, धूम मच जाती है । सब उसके दर्शनों के लिए दौड़ पड़ते हैं । बहिनें उसे देख कर सिहाती हैं । मातायें अपनी स्नेहमयी—गोद में उठा कर उसका सुन्दर रूप निरखती हैं । भाइयों को उसपर गर्व है । आज उसके बल पर, देश भर सिर उठाये हुए हैं । वह सर्वत्र निःशङ्क बना घूमता है । उसकी श्यामली मूर्त्ति ज्योति से देदीप्यमान बन रही है । उसका गम्भीर मस्तक, ज्योतिमयी आंखें और मृदुल मुसकराहट से भीगे हुए उसके अधर, सदा आशा का सन्देश देते हैं । हमारे राष्ट्र-योगी की ऐसी सुन्दर प्रतिमा है कि, आज घर घर में उसका वास है । महलों से लेकर ग़रीब की झोपड़ी तक में उसका निवास है, विद्वान उसे मानते हैं, और अपढ़ तक उसे जानते हैं । हिमालय की गुफाओं में उसकी चर्चा है, और शहरों में उसीकी शोरगुल है । पुस्तकालयों की मेज़ों पर उसका ज़िक्र आबाद है । बाज़ारों की दीवारों पर वह पढ़ा जाता है !

जंगल के बटोही उसकी कथायें कह कर सफ़र तय करते हैं। नावों पर चढ़े हुए लोग लहरों के साथ उसकी सदायें सुनते हैं।

छोटी छोटी लड़कियाँ आपस में लड़ कर, उसीसे शिकायत करने की धमकी देती हैं! स्कूल जाते समय बालक वृद्ध अपनी सफ़ेद टोपियों में उसी का दिव्य-दर्शन करते हैं। आज जिसके शरीर पर खद्दर का निवास नहीं, उसे लोग अजनबी पुकारते हैं।

आफ़िसों में बैठे हुए, क्लर्क लोग जब आपस में पूछते हैं कि, "आज की क्या ख़बर है?"—तब उसीका ज़िक्र आजाता है। देश के कोने २ में अजीब बहसें दरपेश हैं। आज लाट साहब से लेकर चौकीदार तक चौकन्ने कानों से उसी की बात सुनता नज़र आता है। बिजली के तारों में उसकी ही ख़बरें दौड़ा करती हैं। शिमले की पहाड़ियों पर टाइप-रायटर की खटर-पटर न मालूम उसका क्या २ हाल छापा करती है। डाक घर के लिफ़ाफ़ों तक में उसका ही हाल बन्द रहता है। चिट्ठीरसे के थैले में भी उसीका राज्य है। प्रेस के कम्पोज़ीटर एक २ अक्षर मिलाकर उसीका खबरें पूरी करते हैं। रेल के मुसाफ़िरों में उसके कारनामों पर बहस छिड़ी रहती है। अख़बार बेचने वाले उसका ही नाम पुकार कर दिन भर की रोटियाँ बटोर ले जाते हैं। लाखों आदमी उसके नाम से रोटियाँ कमाते हैं। अनाज के बाज़ारों में उसकाही तज़किरा है। देश भर में उसका ही कोलाहल है।

इतना ही क्यों, समुद्र पार बैठे हुए लोग भी उसकी ख़बर पढ़ने के लिए उत्सुक रहते हैं। दुनियां के आला-दिमाग लोग उसकी एक २ बात पर घन्टों सोच-विचार करते हैं।

लेकिन, हमारा मस्ताना जोगी देश-प्रेम की भभूत रमाये हुए, अपनी धुन में पागल बना घूमता-फिरता है। तन पर उसके कितने कपड़े हैं, इसकी भी उसे सुध नहीं। वह गली २, कूचे २ और कोने २ में आजादी का अलख जगाता फिरता है। उसकी धूम के नक्कारे हर सिम्त में गूंज रहे हैं, पर उसे कुछ सुनाई नहीं पड़ता। वह अपने ही राग में मस्त है। आज साठ करोड़ आँखें उसकी ओर टकटकी लगाये हुए हैं। उसकी बात ईश्वरीय-वाणी समझी जाती है। वह जो कुछ कह देता है, उसे सब लोग सिर-आँखों पर लेते हैं।

हमारे जोगी को मौत से ज़रा भी भय नहीं। डर को वह कायरता समझता है। मृत्यु में वह सफलता का दृश्य देखता है? दुनियाँ के परदे को ढूँढ़ आइये। मगर, ऐसा जोगी कहीं न मिलेगा। पापी उससे घबड़ाते हैं। प्रायश्चित करने वाले उसे प्यार करते हैं। उसकी भोली बातें सुन कर धर्मात्मा लोग दाँतों तले उगली दबाते हैं। लेकिन, उसकी बातें सब सच्ची होती हैं। मार्मिक परिभाषा में उसकी सारी बोल-चाल होती है।



जोगी ने अपनी धूनी से उठाकर थोड़ी सी भभूत हवा के झोंकों में उड़ा दी है। उसी का जादू सारे देश में काम कर रहा है। हमारे जोगी के साथ देश भर जोगी बनता जा रहा है। मसजिद की अज़ाँ में उसकी ही आवाज़ गूँजती है। मन्दिर के शंखनाद में वही कुछ कहता सुनाई पड़ता है। ऐसी विकट जागृति उसने फैलादी है कि, सारा देश सोते हुए से जग पड़ा। और तो और, जुलाहों के ताने-बाने में उसका साम्राज्य छाया हुआ है। वैरागी साधुओं में उसका

धुन समा गई है। धर्म उसकी सेवा करने के लिये बढ़ रहा है। ग़रीब के चिथड़ों से लेकर अमीर के दुशाले तक पर उसकी छाप छपी हुई है। कोई उसे साधू कहता है। कोई उसे तपस्वी बतलाता है। बहुतेरों का ख़याल है कि, वह अवतार है। देवता मानने वालों की भी संख्या कम नहीं। मगर, देखने और सुनने में वह एक साधारण मनुष्य है।

कोई कुछ भी कहे, पर, वह ख़ुश और नाख़ुश होना जानता ही नहीं। हिन्सा और क्रोध की अपवित्र-वायु उस तक पहुँचने का साहस नहीं करती। मगर, इतने सुरक्षित वायु-मण्डल में विचरते हुए भी वह निश्चिन्त नहीं है। फ़िक्रों के पहाड़ उसके रास्ते में हैं। रुकावटों के काँटे उसके पैरों में सदा चुभा करते हैं। लेकिन वह उनकी ज़रा भी परवाह नहीं करता। असत्य उसे लालच देता है। छल उस पर मोहिनी फूँकता है। गर्व उसे झूठा आदर देना चाहता है। शक्ति उसे भयभीत करना चाहती है। पर, वह उन्हें देख कर मुसकरा देता है, और वे सारी पशु-वृत्तियाँ लज्जित होकर भाग जाती हैं!

हमारे जोगी की धुन एक है। वह किसी को खोजता फिरता है। ढूढ़ता फिरता है। कभी २ वह यह भी कहता है कि, वह खोज पागया है। जहाँ तक पहुँचने के लिये वह बढ़ा जा रहा है। दुनियाँ जानती है कि, वह क्या खोज रहा है। हम भी जानते हैं। इसी लिये, सब उसकी ओर टकटकी लगाये हुए हैं। वह स्वाधीनता देवी का मन्दिर ढूँढ़ रहा है। कंटीले मार्गों से होता हुआ, वह जा रहा है। लेकिन, उसके रास्ते को साफ़ करना हमारा काम है।

* * * * *

जोगी की तपस्या सफल होने वाली है। देवी का दरबार लगने वाला है। देश भर सजग होकर खड़ा हो जाय अपने २ स्थान पर खड़े होकर सब दर्शन की बाट जोहें। जिन दर्शनों के लिये जोगी ने अलख जगाया है, उन्हीं दर्शनों की सब को लालसा है। समाधि टूट जाय, और सब को दर्शन मिलें, इसी धुन में हमारा जोगी घूम रहा है !

* * * * *

दैनिक वर्तमान के सम्पादक श्रीयुत रमाशंकर अवस्थी के उपर्युक्त शब्दों में—हमारे देश का जो ऐसा मस्ताना जोगी है—उसका दर्शन पाठक, इस पुस्तक के मुखपत्र पर ही करेंगे।





भूमिका।



स्वराज्य ऐसे गम्भीर और विस्तृत विषय पर जो कुछ लिखा जाय वही थोड़ा है। परन्तु इस पुस्तक का तो यह किञ्चित मात्र उद्देश्य ही नहीं है कि हम स्वराज्य के किसी अंग पर भी विस्तार रूप से कुछ लिखें। इसका उद्देश्य तो केवल यही है कि स्वराज्य सम्बन्धी आवश्यकता, आधुनिक आन्दोलन और देश जागृति का संक्षिप्त चित्र पाठकों के सामने रक्खा जाय।

स्वराज्य की जैसी अनिवार्य आवश्यकता इस समय देश के सामने उपस्थित है वह किसी भी बुद्धिमान और विचारवान भारतवासी से छिपी नहीं है। देश के सब श्रेणी के नेताओं ने इस आवश्यकता को एक स्वर से स्वीकार किया है और उसकी प्राप्ति के लिये वे अपूर्व स्वार्थ-त्याग कर अत्यन्त उत्साह और दृढ़ता के साथ कार्य कर रहे हैं। उन्हें इस मार्ग में सब प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है और वर्तमान सरकार उनके मार्ग को कंटकमय बनाने के लिये भूलकर भी किसी उपाय के अवलम्बन करने में नहीं चूकती। इस समय निशस्त्र और शस्त्रधारी का अद्भुत युद्ध देखने में आ रहा है। संसार की आंखें इसी ओर लगी हुई हैं।

भारतीय राष्ट्रीय महासभा का इस समय केवल एक यही उद्देश्य है कि भारत के लोग उचित और शान्तिमय उपायों द्वारा अपने लिये स्वराज्य प्राप्त करें, और उसने नागपूर के अन्तिम अधिवेशन में असहयोग सम्बन्धी यह प्रस्ताव पास किया था:—

" चूंकि कांग्रेस (राष्ट्रीय महासभा) की राय में, भारत की वर्तमान सरकार में देश का विश्वास जाता रहा, और चूंकि भारतवासी अब स्वराज्य स्थापित करने पर कटिबद्ध हो गये हैं, और चूंकि कांग्रेस महासभा के अन्तिम विशेष अधिवेशन के पहले जो उपाय प्रयोग में लाये गये, वे सब, अपने अधिकारों और स्वतंत्रताओं और अपने असंख्य और गहरे अन्यायों और विशेष कर खिलाफत और पंजाब के क्षतिपूर्ण की उचित स्वीकृति प्राप्त करने में निष्फल हुए, अब यह कांग्रेस अपने कलकत्ता के विशेष अधिवेशन में पास किये हुए शान्ति पूर्ण असहयोग के प्रस्ताव को स्वीकार करती हुई, घोषणा करती है कि शान्ति पूर्ण असहयोग के प्रस्ताव का कुल या एक या अधिक भाग, जो एक सिरे पर वर्तमान सरकार के साथ स्वेच्छित सहयोग छोड़ने से आरम्भ होकर दूसरे सिरे पर उसको टैक्स देने की इन्कारी के साथ समाप्त होता है, उस समय से प्रयोग में लाया जाय, जिसे इंडियन नेशनल कांग्रेस या आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी निर्धारित करे, और यह कि इस बीच में उसके लिये देश को जागृत करने को, उस ओर दृढ़ उपायों से बराबर काम लिया जाना चाहिये । "

उस समय से कांग्रेस के नेताओं ने जिस साहस और बुद्धिमत्ता से भारत की राष्ट्रीय नौका को अन्याय और अत्याचार रूपी पवन के झकोरों से बचाकर अशान्तिमयी सागर से स्वराज्य के किनारे लाने का प्रयत्न किया है, वह अत्यन्त सराहनीय है। इतने अल्पकाल में देश का जो राष्ट्रीय संगठन हुआ है वह विशेष उल्लेखनीय है। इन दशाओं को देखते हुए राष्ट्र के हृदय में आशा उत्पन्न होती है, और यह कहना पड़ता है कि मार्ग में चाहे कठिनाइयाँ कितनी ही हों और चाहे लक्ष्य

लक्ष्य तक पहुँचने में पूर्व निर्धारित से कुछ अधिक समय क्यों न लग जाय, पर अन्तिम विजय सत्य की होगी और भारतवर्ष 'स्वराज्य' भोगेगा।

आल इंडिया कांग्रेस कमेटी और कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी ने देश के भिन्न भिन्न प्रान्तों में समय समय पर देश की दशा और असहयोग की सफलता के लिये ऐसे प्रस्ताव स्वीकृत किये हैं जो उस समय के लिये उपयुक्त प्रतीत हुए हैं। प्रत्येक शिक्षित भारतवासी को इन प्रस्तावों पर विचार और उनका प्रचार करना चाहिये।

देश को अत्यन्त अल्पकाल में बहुत बड़ा कार्य करना है और इसी कारण बड़े बड़े विचारवान गंभीर विद्वानों के विचार भी समय समय पर डांवाडोल हो जाते हैं और वे कहने लगते हैं कि ऐसे बड़े प्रोग्राम का इतने अल्पकाल में होना असंभव है। परन्तु उन्हें स्मरण रखना चाहिये कि जिन शर्तों पर एक वर्ष में स्वराज्य-प्राप्ति की घोषणा की गई थी, वे शर्तें सम्पूर्ण देश पर निर्भर हैं: यदि हम और आप उनका कुछ ध्यान न रक्खें और देश-भक्ति को भुलाकर दासता के सुखही को स्वीकार करते हुए स्वार्थ त्याग और कष्ट से मुँह मोड़ें तो प्रोग्राम की सफलता की कितनी आशा की जा सकती है? देश सेवक अपना काम करेंगे चाहे आप उनका साथ दें या न दें और वे आप से बार बार निवेदन करेंगे कि आप भारतमाता की लाज के लिये देशकी स्वतंत्रता के युद्ध में भाग लीजिये, और वे अपना तन और मन निछावर कर आपके लिये उदाहरण बनकर आपका उत्साह बढ़ावेंगे। अब सोने वा विचारने का नहीं, बल्कि काम करने का समय है।

देश की कठिन परीक्षा का समय आ गया। अब सब प्रकार की कठिनाइयाँ हमारे मार्ग में लाई जाँयगी और

हमारी शान्ति, धैर्य, और उत्साह तोड़ने को बलिष्ठ आक्रमण किये जाँयगे। परन्तु जिस प्रकार आपकी परीक्षा बाहर से होगी वैसी ही परीक्षा भीतर से भी होगी इस समय आपकी स्वराज्य-योग्यता जाँचने के लिये आपके सामने स्वदेशी का प्रोग्राम रक्खा गया है। आपकी इसी सफलता पर आपकी भविष्य स्वराज्य-सम्बन्धी सफलता निर्भर है। केवल इसी एक प्रोगाम की सफलता आपको स्वराज्य दिलाने में यथेष्ट हो सकती है। इसकी पूर्ति के लिये सहयोगी या असहयोगी होने की आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक देशवासी को खद्दर को आदर देना चाहिये और यथाशक्ति उसीका व्यवहार करना चाहिये। यदि आपको देशके राष्ट्रीय भाव से कुछ भी प्रेम या सहानुभूति है तो आप इस प्रोग्राम की शर्त के लिये तन, मन, धन से कटिबद्ध हो जाइये। चाहे आप सरकारी नौकर भी हों तो भी आपको स्वदेशी वस्त्र धारण करना चाहिये।

अब क्रियात्मक रूप से काम करने का समय आ गया है। अब सभा करने, वक्तृता सुनने, नेताओं से आदेश पाने की आशा छोड़ कर प्रत्येक व्यक्ति को अपना कर्तव्य पालन करना चाहिये और स्वयं अपना नेता बनकर कार्य करके दिखलाना चाहिये। अब स्वयं अपनी आँखों आपने देख लिया कि जेलखानों की शोभा बढ़ाने के लिये आपके बड़े से बड़े नेता आमंत्रित किये जा रहे हैं। यही नहीं अब प्राण और अपना सर्वस्व अर्पण कर आपके नेता भारतमाता की स्वतंत्रता पर बलिदान हो दूसरे लोक की यात्रा करने लगे। यदि अपने देश की स्वतंत्रता के लिये युद्ध करना पाप और दोष है और उसका विचारक वही नौकर-शाही हो सकती है, जिसको सुधारने या नष्ट करने के लिये युद्ध हो रहा है, तो कहना पड़ता है कि यदि अब हमारे

भाइयों में आत्म-सम्मान का कुछ भी भाग शेष हो तो आप अपने शान्तिमय युद्ध को सहस्रगुण अधिक उत्साह से लड़कर जेलखानों के डरों को दूर करते और नौकरशाही के शस्त्रों को निरुपाय बनाते हुए अपनी विजय शीघ्रता से प्राप्त कीजिये। विजय तो आपकी अवश्य ही होगी, पर आधे दिल से काम करने में वह विजय दूर होती जायगी।

अन्त में हम अपने वक्तव्य को समाप्त करते हुए आपसे आशा रखते हैं कि आप कांग्रेस कमेटी की आज्ञाएँ पालते हुए, दत्तचित्त होकर कार्य करेंगे। निरुत्साह मत हूजिये। किसी प्रकार के डरकी चिन्ता मत कीजिये। भारतमाता और अपने निस्वार्थी नेताओं की लाज रखना आप ही के हाथ है। दासता के सुखों से स्वतंत्रता के दुःख भी अच्छे होते हैं। स्वराज्य प्राप्त करने के लिये आप सैनिक बनकर रणक्षेत्र में आइये। युद्ध की विकरालता से पैर पीछे न हटाइये। देश-युद्ध में मरने या विजय प्राप्त करने में दोनों प्रकार से यश आपही का रहेगा।

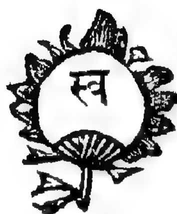
यदि इस पुस्तक को पढ़कर देश का एक वीर भी स्वतंत्रता के युद्ध में आने के लिये उत्साहित होगा, या यदि पाठकों के हृदय में स्वराज्य प्रति कुछ भी प्रेम उत्पन्न होगा तो लेखक अपने परिश्रम को सार्थक समझेगा।

प्रयाग
विजयदशमी १९७८ } लेखक।

स्वराज्य



प्रारम्भिक वक्तव्य।



राज्य का नाम कितना प्यारा है ? इसमें कितनी मधुरता है ? इससे मानव जाति का कितना घनिष्ठ प्रेम है ? इत्यादि । इन प्रश्नों का उत्तर हम आपको नहीं देना चाहते । आप इन प्रश्नों के उत्तर स्वयं अपने आस पास की दशाओं और चेष्टाओं से ज्ञात कीजिये। वे ही आपको उचित उत्तर देंगे ।

आज भारत-गगन मंडल स्वराज्य की मधुर ध्वनि से गूँज रहा है । यह ध्वनि सावन-भादों मास की वर्षा की छोटी छोटी कणों के रूप में गिर कर हमारे तप्त हृदय को अत्यन्त आनन्द पहुँचा रही है, ओस की शीतल बूँदों की भाँति यह आज हमारे नवयुवकों और नवयुवतियों के मानस-पटल के उगते हुए अंकुर को उत्तेजना दे रही है । अनायास ही भारत के स्वर मात्र में ' स्वराज्य ' ही का प्राण-पोषक मंत्र सुनाई पड़ता है। स्वराज्य की सुहावनी लहरें आज हिन्द-महासागर पर अपनी सुन्दर प्रतिमा दिखाते हुए चारों ओर लहरा रही हैं।

स्वराज्य रूप में प्रेम उमड़ पड़ा है। वैर विरोध की कमी होती दीखती है और भ्रातृभाव बढ़ता ही जा रहा है। हिन्दू-मुसलमान अब एकता और प्रेम के गूढ़ रहस्य को समझने लगे हैं। प्राचीन काल की सभ्यता और ऋषि मुनियों के आदर्श हमारे सामने फिर उपस्थित हो रहे हैं। हम अपने आत्मबल की श्रेष्ठता का पाठ आज फिर संसार को पढ़ाया चाहते हैं।

यह सब ठीक है। पर स्वराज्य है क्या ? क्या वह ऐसाही सुलभ और महत्त्वदायी है जैसा कि हम उसे समझते हैं। उत्तर में आपको निराश होना पड़ेगा। 'स्वराज्य' कभी सुलभ नहीं है—उसके पथ में काँटों और कठिनाइयों का ढेर लगा हुआ है। उसकी महत्त्वता भी ऐसी नहीं जो हमारी आपकी समझ में तुरन्त ही आ जाय। वह कहीं अधिक महत्त्वशाली है। ज्यों ज्यों हम उसके लिये अधिक प्रयत्न करते जायगे, क्रमशः उसके सुन्दर स्वरूप के दर्शन पाने योग्य हो सकेंगे।

जो वस्तु जितनी अधिक प्यारी होती है उसकी प्राप्ति भी उतनी ही कठिन होती है। यदि हमें गुलाब का फूल प्यारा है तो उसके प्राप्त करने में हमें काँटों का सामना भी करना पड़ता है। मलयागिरि चन्दन प्राप्त करने के लिये कितनी ही आपत्तियाँ झेलनी पड़ती हैं। दिन रात की कठिन तपस्या और संयम से हमें कहीं सद्गति प्राप्त होती है। संसार-विरागी होने ही से हमें मोक्ष मिल सकता है। सारांश यह कि परिश्रम ही की माप से फल की श्रेष्ठता का पता लगता है।

'जाने ऊख मिठास को जो मुख नीम चबाय।' यह संसार परिवर्तनशील है। इसमें परमात्मा ने किसी वस्तु को भी एक दशा में नहीं रक्खा है। जो आज नीचे है वह कल ऊपर

उठेगा और जो आज सर्व-श्रेष्ठ आसन पर विराजमान है कल उसका मस्तक नीचा होगा। परिवर्तन अमिट है। यही कियेता का लक्ष्य है। यही सभ्यता का चिन्ह है। यदि परिवर्तन नहीं, तो मनुष्य जाति नहीं और संसार नहीं। जो व्यक्ति कभी बीमार नहीं हुआ वह स्वास्थ्य के असली गुण को नहीं समझ सकता, जो विद्यार्थी कभी परीक्षा में अनुत्तीर्ण नहीं हुआ वह सफलता के वास्तविक गुण से अनभिज्ञ है। इसी प्रकार जिस देश ने कुछ समय के लिये अपनी स्वतन्त्रता और स्वराज्य को नहीं खोया, क्या वह कभी उनके मुख्य गुणों को जानने का दावा कर सकता है? कदापि नहीं। ऊख के मीठेपन का स्वाद उसी को विदित होता है जिसने उसके पहले नीम की पत्ती चखी हो।

बहुत दिनों तक रोग ग्रसित रहकर अब भारत ने अन्त को यह दृढ़ संकल्प कर ही लिया कि अब वह बीमारी की दशा में नहीं रहेगा। रोगावस्था अच्छी नहीं। उसमें पड़े रह कर प्राकृतिक नियमों की अवहेलना करना उचित नहीं है। प्रकृति कभी नहीं चाहती कि मनुष्य बीमार हो। बीमारी के उत्पन्न करने वाले स्वयं हम हैं। प्रत्येक देश को स्वावलम्बित रह कर अपनी उन्नति करने का पूर्णाधिकार है। पर वह नियमपूर्वक और धर्मानुसार होनी चाहिये। यही परमात्मा का भी लक्ष्य है।

भारत की बढ़ती अराजकता और पापों का सहन महती-शक्ति से न हो सका। उसने निश्चय कर लिया कि इस प्रगाढ़ सुप्तावस्था से यहाँ के निवासियों को जगाना चाहिये। उन्हें विदित करा देना चाहिये कि उनमें जीव है, वे मनुष्य हैं, एक महात्मा को उनके बीच में खड़ा करके यह मंत्र

'उठो अपना मान सम्हालो और स्वराज्य भोगो' देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक छोटे बड़े, स्त्री पुरुष, सभी के कानों में फूँक दिया। वह महती शक्ति कौन है? वह परमात्मा की प्रेरित स्वयं भारत-माता है। वह अपने पुत्रों और पुत्रियों से कह रही है, 'बालको उठो, बहुत देर हुई। सूर्य ऊपर निकल आया। छोटे बड़े सब अपने काम में लगे। तुम्हारे सोने से, मुझे निस्सहाय जान लालची विदेशियों ने मेरी सम्पत्ति पर हाथ लगाना प्रारम्भ कर दिया। यदि तुम नहीं उठे तो तुम्हारी भावी सम्पत्ति सभी छिन जायगी।'

अब हम होश में आये हैं। आँखें खोलकर देखते हैं तो रंग ढंग बदला हुआ मालूम होता है। गाढ़ी निद्रा और आलस्य का परिणाम ऐसा ही हुआ करता है। अस्तु, जो अब करना है, उसके लिय हमें झटपट कटिबद्ध हो जाना चाहिये। हम स्वराज्य लेंगे। यह केवल हमारी इच्छा मात्र नहीं है। यह हमारा दृढ़ सङ्कल्प है। अपने विरोधियों से बिना पूर्ण स्वराज्य प्राप्त किये, अब हम विश्राम न ग्रहण करेंगे। उसको प्राप्त कर हम अपनी माता का मस्तक उच्च करेंगे। अपने जीवन को सफल बनायेंगे।

अब हमारा लक्ष्य पूर्ण स्वराज्य है। इस स्वराज्य से हमारा मतलब है कि धर्मानुकूल हमको अपने सब कार्यों के करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हो। किसी प्रकार के अनुचित नियम से हम बांधे न जायँ। हमको अपने देश की आवश्यकतानुसार सब प्रबन्ध करने, समझने, बूझने की स्वतंत्रता प्राप्त हो। हम किसी द्वारा विवश किये जाकर उसके स्वार्थ के लिये कठपुतली का खेल नहीं खेलना चाहते। हम अपना शासन अपनी इच्छानुसार करना चाहते हैं।

अब हम में जातीय भाव उत्पन्न हो गये हैं, जो दिन रात बढ़ते जा रहे हैं। इनको आवश्यकतायें हमें पूरी करनी पड़ेंगी। हमें अपनी आत्म-प्रतिष्ठा का ध्यान है। हम अपनी हानि लाभ को समझने लगे हैं और उसी अनुसार अपने शासन-ढङ्ग को देखना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे बालकों की शिक्षा जातीय आवश्यकताओं के अनुसार हो। विद्यार्थी सच्ची शिक्षा के महत्व को समझ सकें। वे अपने देश की वास्तविक दशा से परिचित हों।

हमारा स्वराज्य पंजाब के हत्याकांड और ख़िलाफ़त के झगड़े को फिर भारतवर्ष में असम्भव बनाना चाहता है। हमारे स्वराज्य का यह अर्थ नहीं है कि हम सरकार से प्रार्थना करें कि वह पंजाब के हत्याकारियों को दंड दे या ख़िलाफ़त के मसले को हल करे। हमारा स्वराज्य स्वयं इनका निपटारा करेगा। जिस शासन-प्रणाली ने इनका जन्म दिया था, उसी प्रणाली को तोड़ और उसे समूल नष्ट कर हम स्वराज्य की नीव पक्की करना चाहते हैं, जिससे देश की रक्षा अत्याचारियों और लालचियों से भविष्य में भी हो सके और देशमें सच्चे न्याय की शंख-ध्वनि हो। हम किसी से स्वराज्य की भिक्षा नहीं माँगते। स्वराज्य माँगने से नहीं मिला करता। उसके लिये कठिन उद्योग की आवश्यकता हुआ करती है। वह स्वराज्य हम सब को अपने स्वार्थ त्याग से स्वयं उत्पन्न करना है। यह दैवी प्रेरणा है। इसे कोई रोक टोक नहीं सकता।

परमात्मा ने इस पुण्य भूमि को ऐसे उत्तम रीति से बनाया है और इसमें ऐसे पदार्थों को उत्पन्न किया है कि यदि हम चाहें तो सारे जगत से न्यारे रह सकते हैं और सब प्रकार अपनी रक्षा पूर्णरीति से कर सकते हैं। अन्य देश हमारे

आश्रित रह सकते हैं। हमें उनके आश्रित नहीं रहना पड़ेगा। हमारा जीवन, हमारे देश की जल-वायु और सभ्यतानुकूल होना चाहिये, जो सादगी और प्रेम से भरा है।

अपना स्वराज्य प्राप्त करने में किसी की हत्या करना तो दूर रहा, हम किसी का अनिष्ट ताकने या उससे द्वेष करना भी नहीं चाहते। अंग्रेज़ जाति या व्यक्तिगत अंग्रेज़ शासक हमारे घृणा के पात्र नहीं हैं। उनसे हमारा द्वेष नहीं बल्कि प्रेम है। उनमें कई अच्छे अच्छे गुण वर्तमान हैं। परन्तु जो कोई प्रणाली या व्यक्ति हमारे स्वराज्य-प्राप्ति-मार्ग में बाधक होगा—चाहे वह भारतीय हो या विदेशीय—उससे हम अपना सब सम्बन्ध छोड़ देंगे और जिन शान्तिमय नियमों द्वारा हम स्वराज्य प्राप्त कर सकेंगे, उनका अवलम्बन हम अवश्य करेंगे।

स्वराज्य ही हमारा लक्ष्य है। इसी जीवन-लक्ष्य को सामने रख कर हम देश-सेवा और मातृ-पूजा के लिये अपना सर्वस्व अर्पण करना चाहते हैं। हमें जीवन के आनन्दों से इस समय कुछ सम्बन्ध नहीं है। न तो वे हमारे लिये हैं और न हम उनके लिये। हम ऋषियों की सन्तान हैं। हमारे लिये धर्म सर्वोपरि है। हम अपने जीवन को सरल और आत्मिक तथा धार्मिक बनाना चाहते हैं। हम अपने देश का प्रबन्ध स्वयं करना चाहते हैं। हमें विदेशियों के बाह्य रंग ढंग की कुछ आवश्यकता नहीं। हमें स्वराज्य प्राप्त करने में कठिनाइयों का अवश्य सामना करना पड़ेगा। पर उसे हम पहले से जानते हैं। उनसे हम डरते नहीं, बल्कि उनका स्वागत करते हैं। स्वार्थों को अलग रखकर हम स्वराज्य-वेदी पर अपने प्राण निछावर करेंगे और अपने देश के लिये पूर्ण धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का

दृढ़ उद्योग करते रहेंगे और जब तक वह प्राप्त नहीं होता हमारे जीवन का एक यही महान उद्देश्य बना रहेगा । ईश्वर इसमें हमें सहायता और शक्ति प्रदान करे ।



प्राचीन इतिहास ।

भारतवर्ष एक बहुत ही प्राचीन देश है, जिसका इतिहास संसार में अपनी समता नहीं रखता। जब वर्त्तमान की कई प्रसिद्ध योरोपीय शक्तियों का विकाश भी नहीं हुआ था, उस समय भारत अपनी सभ्यता में जगत्प्रसिद्ध था और दूर देशान्तर के राज्यों से अपना सम्बन्ध रखता था। इतिहास सभी देशों का बदला करता है। भारत भी उस नियम से बाहर नहीं रहा है।

बहुत प्राचीन काल से भारत में प्रजा-सत्तात्मक राज्य-प्रणाली का वर्णन पाया जाता है। जबसे प्रमाणिक इतिहास का पता लगता है, अर्थात् सन् ईस्वी के पूर्व आठवीं शताब्दि में भारत अनेक प्रजा-सत्तात्मक राज्यों में बटा हुआ था। बुद्ध-भारत में भी उत्तरी भारत प्रायः प्रजातंत्र ही शासन का केन्द्र बना था। पुराणों के काल में तथा उनके पूर्व वैदिक प्रजातंत्र प्रणाली प्रचलित थी। उस समय ग्राम २ में पंचायतें नियत थीं और उन पंचायतों के मुखिया कुलपति या प्रजापति कहलाते थे। उस प्रणाली का यहाँ पर उल्लेख करना हमारा अभीष्ट नहीं है। उस समय राष्ट्र-शासन की बागडोर प्रजा ही के हाथों में थी। कालान्तर में उसके स्थान में एकाधिपत्य प्रणाली ने अपना अधिकार जमाना आरम्भ किया।

भारत के महाराजाओं का शासन भी ऐसे समाजों द्वारा संगठित होता था, जिसमें प्रजा की बातों का स्वर था और अपने शासन में उनका बहुत बड़ा हाथ था। महाराज राम-

चन्द्र और युधिष्ठिर उदाहरणार्थ केवल आदर्श मात्र हैं। सम्राट् अशोक और विक्रमादित्य, इत्यादि के शासन हमें स्मरण दिलाते हैं कि प्रजा के सुख-समृद्धि के लिये महाराजा गण कितना अधिक परिश्रम करते थे और उनका ध्यान रखते थे। मनुष्यों का तो कहना ही क्या था, पशुओं की भी पूरी सुध ली जाती थी।

मध्यकाल में भी बादशाह अकबर तथा कई अन्य शासकों के समय में भारत बहुत उत्तम रीति से शासित होता रहा है। जिस विदेशी शासक ने भारत पर राज्य किया वह स्वयं आकर प्रजा के बीच बसा, भारत को अपना देश और प्रजा का हित अपना कर्तव्य समझा और इसी सिद्धान्त पर उसने भारत का शासन किया। शासन बदलने और समय समय पर स्वेच्छा-चारियों के हाथ में शासन डोर जाने पर भी भारत कभी इतना दरिद्र नहीं हुआ जितना कि वह आज है। कारण स्पष्ट है। उस समय देश का रुपया देश में खर्च होता था। लोगों को खाने पीने की तंगी न थी। देशी कलाओं और कारीगरियों की प्रतिष्ठा थी। अपने देश के बने कपड़े पहने जाते थे। इस सम्बन्ध में यह समय, उस समय के बिल्कुल विपरीत है और हमारे दरिद्र तथा भूखे रहने का एक बहुत बड़ा कारण है।

सभी देशों की काया-पलट हुआ करती है। तो क्या भारत-वर्ष दूसरे देशों से कुछ भिन्न है जो यह भी औरों के समान अपने युद्धों, आक्रमणों, विजयों और पराजयों पर गर्व न करे? इस देश ने भी विजयी राजाओं को भारतीय बना कर बाद को अपने को अधिकतर सम्पत्तिशाली बनाया है। समीकरण में यह देश अद्भुत शक्ति रखता है, जो कोई आया उसे इसने

अपना ही कर लिया है। हाँ, अभी तक अंग्रेजों का समीकरण नहीं हुआ है। परन्तु इनके आये ही कितने दिन हुए हैं। इने गिने १५० वर्ष ही से तो ये भारतवर्ष में हैं। हमको अपने देश के पिछले गौरव से और स्वयं भारतवर्ष में उत्पन्न होने से कभी न लज्जित होना चाहिये। संसार भर में किसी भी सजीव देश का भूतकाल इतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि हमारे देश का है, कोई भी दूसरा देश इसके समान प्रकाशवान भविष्य की आशा नहीं रखता है। अपने भूतकाल का ज्ञान हमें अपना भविष्य सुधारने और बनाने में सहायता देता है।

प्रकृति ने भारतवर्ष को सब प्रकार से परिपूर्ण कर रक्खा है। यहाँ के निवासियों की सब आवश्यकताओं की माँग देश में भली प्रकार पूरी हो सकती है किसी वस्तु के लिये भारत-वासियों को अन्य देश के मुंह देखने की आवश्यकता नहीं है। इस लिये यदि हमारा सम्बन्ध पृथ्वी के अन्य राष्ट्रों से पृथक भी हो जाय तो हमारे लिये किसी प्रकार की चिन्ता नहीं है।

केवल एक प्रश्न जो इस सम्बन्ध में किया जा सकता है वह यह है कि जब कोई बाहरी शत्रु इस देश पर आक्रमण करेगा और अंग्रेज़ उसकी रक्षा के लिये न रहेंगे तो क्या दशा होगी? इसका उत्तर वही एक उत्तर है जिसकी जड़ पर आज हम स्वराज्य माँग रहे हैं, अर्थात् भारत की एक जातीयता। इतिहास हमें स्पष्ट शब्दों में बतला रहा है कि भारत की जब कभी पराजय हुई है केवल उसी समय जब कि देशवासियों में फूट रही है और केवल उतने ही भागों में जिनमें कि यह दशा वर्तमान रही है। ऐसे ही अवसरों का उपयोग कर अंग्रेज़ भी क्रमशः भारत के राजा बन गये। भारत ने फूट का

स्वाद चख लिया, अब वह एकता से विजय प्राप्त किया चाहता है। प्राचीन फूट ने वर्तमान एकता का जन्म दिया है।

भारतवर्ष प्रजा-तन्त्र शासन को बहुत पूर्व अनुभव कर चुका है। वह उसके उत्तम गुणों को सदा सम्मान की दृष्टि से देखता आया है। पंचायत-प्रणाली इसका प्रमाण है। स्वेच्छाचारियों से भारत समय समय पर कष्ट पा चुका है, पर जब जब स्वेच्छाचारी अत्याचारी हुए हैं भारत ने सदा ही उस शासक या शासन-प्रणाली के नष्ट करने में सफलता प्राप्त की है। उन्हीं स्वेच्छाचारी अत्याचारों से व्याकुल होकर भारतवासी आज दिन फिर उस शासन-प्रणाली—जिसने उनपर सब प्रकार के अत्याचार कराये हैं—के नष्ट करने की कमर कस ली है।

विदेशी शासन के लिये भारत की भूमि उर्वरा नहीं है। विदेशी शासन भारत में चिरस्थायी या सफल नहीं हुआ है। महान सिकन्दर तथा कुशान, शक और हूण इत्यादि जातियों के शासन इसके प्रमाण हैं। विदेशी शासकों और भारतीय प्रजा के स्वार्थ में बड़ा ही अन्तर है। धर्म और वर्ण की भिन्नता भी शासक और शासित के सम्बन्ध में बड़े अन्तर डालने वाली वस्तुएँ हैं।

भारतीय प्रजा, लोक प्रिय शासक को पसन्द करती है जो उसके सुख दुःख में मिल कर रहे और उसके स्वत्वों और स्वार्थों की रक्षा कर सके। ऐसा शासक उन्हें ईश्वर के तुल्य पूज्यमान होता है। परन्तु ब्रिटिश सरकार की दशा दूसरी है। विदेशी होने के कारण, अच्छे होने पर भी, वह लोकप्रिय नहीं हो सकती, लोक-प्रियता का न होना उसमें एक महान दोष है। उसकी दृष्टि में सदा पक्षपात भरा हुआ है। भारत-

वासियों की अपेक्षा उसकी दृष्टि में अंग्रेज़ सदा ऊँचे हैं। जब तक शासक प्रजा के क्लेशों और स्वार्थों से अनभिज्ञ है, उसका शासन कितने ही उत्तम होने पर भी, वह स्वराज्य का स्थान नहीं ले सकता। अंग्रेज़ी शासन ने भारत में जो असन्तोष फैला दिया है वही स्वराज्य आन्दोलन का मुख्य कारण आ बना है।

तब की दशा और अब की दशा को आप स्वयं तुलना कर सकते हैं। जब मनुष्य सोते हों, तब उन्हें बाजा नहीं अच्छा मालूम होता है। वह उन्हें जगा देता है और उनकी गहरी नींद को उनसे छीन लेता है। देश-सेवा के लिये लोगों को रात और दिन बाजा बजा कर जगाते रहना हमारे लिये परम आवश्यक है। अब सोने के दिन गये और उठकर काम करना ज़रूरी है। आज स्वराज्य-रूपी डंके की चोट से बुड्ढे और जवान सभी सचेत होते जाते हैं और देख रहे हैं कि हम भविष्य में कितनी उन्नति कर सकेंगे। हमें स्मरण रखना चाहिये कि हमारा भारतवर्ष क्या था। ईसा मसीह के जन्म के १००० वर्ष पहले अपने व्यापार और प्रताप में हमारा देश सब का सिरमौर था। इसी से आप अनुमान कर सकते हैं कि हमारी सभ्यता का इतिहास कितना प्राचीन है तथा हमारा भविष्य कितना आशाजनक है।



स्वराज्य की आवश्यकता।



स्वभावतः अब यह प्रश्न खड़ा हो उठता है कि भारत को अंग्रेज़ी शासन में क्या दुःख मिले जिनके कारण उसको स्वराज्य की आवश्यकता आ पड़ी। क्या ब्रिटिश-सम्बन्ध और ब्रिटिश-बल को हम भुला बैठे हैं? स्वराज्य की हवा हमें कहाँ से लग गई और क्या हम स्वराज्य भोगने के योग्य हैं। क्या हमें स्वराज्य की बातें करते समय अपने देश और समाज की दुर्बलता और त्रुटियों का भी ध्यान है? इस प्रकार के अनेकों प्रश्न इस सम्बन्ध में किये जा सकते हैं।

जातीयता। स्वराज्य की मूल जड़ भारत की बढ़ती जातीयता में है। जातीयता का भाव हमारे हृदय में दिन रात बढ़ता जा रहा है और उच्च स्थान प्राप्त कर रहा है। हम आपस में एका रखने के गुणों को समझने लगे हैं। हमारे हृदय में भारतवासियों के प्रति प्रेम बढ़ता जा रहा है।

आज भारतवासी देश विदेश में अपनी स्थिति और प्रतिष्ठा का ध्यान रखता है, पर विदेशी सरकार होने के कारण उसकी सुनवाई नहीं होती। अन्य देश निवासी तो आकर भारत में आदर प्राप्त करें, परन्तु भारतवासी वहाँ जाकर अपमानित हों। इस भाव ने हमारे हृदय में खलबली मचा दी है। इसका प्रतिकार किसी अन्य प्रकार से होना सम्भव नहीं है। केवल एक ही मार्ग है और वह है स्वराज्य।

आत्म-प्रतिष्ठा। यदि आज हम स्वराज्य की अन्य आवश्यकताओं और कारणों को भुला भी बैठें तो आत्म-प्रतिष्ठा हमें विवश कर रही है कि भारत में हमारा स्वराज्य होना नितान्त आवश्यक है। ३२ करोड़ जन-संख्या वाले भारतवासी अपने ही देश में पराधीन और विदेशी बन कर नहीं रह सकते। जब संसार की छोटी छोटी जातियाँ स्वतंत्रता का मधुर स्वाद चख रही हैं तो वह विशाल देश, जिसमें पृथ्वी-मंडल के पंचमांश मनुष्य बसते हों, यदि अपना स्वराज्य न रख सके तो यह उसके लिये क्या लज्जाजनक नहीं है? जिस समय हमें जापान का ध्यान आता है, क्या हम वास्तव में सोच सकते हैं कि हम भारतवासी हिन्दू और मुसलमान जीवित हैं? केवल एक आत्मप्रतिष्ठा के भाव ही ने हमारे हृदय में पूर्ण स्वराज्य तथा स्वतंत्रता प्राप्त करने की जागृति उत्पन्न कर दी है। हम भले ही मिट सकते हैं, पर यह भाव हमारे हृदय से नहीं मिट सकता।

यदि हम जीवित रहेंगे तो मनुष्य होकर रहेंगे, नहीं तो देश के भार बन कर हम नहीं रहेंगे। माता का यह ऋण हमें चुकाना है। हम अपमान सहना नहीं चाहते। जिस प्रकार हो सकेगा हम बन्धनों से मुक्त होकर एशिया की अन्य शक्तियों में शक्ति बनेंगे और संसार के दूसरे राष्ट्रों की दृष्टि में सम्मान प्राप्त करेंगे। क्योंकि ३२ करोड़ भारतवासियों का अत्याचारियों का शिकार बनना केवल उन्हीं पर नहीं बल्कि मनुष्य मात्र पर कलंक लगाने वाली बात है। यदि हम निर्जीव हैं तो यह भले ही सहन हो सकता है, पर यदि हमें सजीव होने का घमंड है तो हमें अपने शिर से यह कलंक उतारना पड़ेगा और अपने स्वराज्य भोगने की योग्यता दिखलाना पड़ेगा।

बिना जातीय अभिमान के कोई जाति न तो उन्नति कर सकी है और न गौरव को पा सकी है। राजाओं का इतिहास देश का इतिहास नहीं है। देश का इतिहास उसके मनुष्यों, उसके कवियों, उसके नाटककारों, उसके अन्य बड़े २ लेखकों उसकी स्त्रियों और पुरुषों का इतिहास है। हमें इसीका मनन करना चाहिये। हमारे सच्चे इतिहास में विरले ही कोई ऐसी बात मिलेगी जिसके कारण हमें लज्जा से अपना शिर झुकाना पड़े। अपना गौरवपूर्ण भूतकाल स्मरण रखना और उसे अपने बच्चों को बताना बहुत ज़रूरी है।

देश की निर्धनता। भारतवर्ष में अति शीघ्र पूर्ण स्वराज्य स्थापन का एक दूसरा बड़ा कारण यहाँ की क्रमशः बढ़ती हुई निर्धनता और आजकल की महँगी है। भारतीय प्रजा की गाढ़ी कमाई का धन भोग विलास की सामग्रियों पर पानी की भाँति बहाया जा रहा है। विदेश तो भारत के धन से धनी बनते जा रहे हैं पर स्वयं अपना देश निर्धन बनता जा रहा है। छः करोड़ भारतवासी तो प्रायः भूखों मरें पर थोड़े से लोलुपों के भोग विलास में कोई कमी न हो, इस कारण देशी वस्तुओं का तिरस्कार करके भड़कीली लुभानेवाली विदेशी वस्तुओं की पूजा की जाय! धन उपार्जन करने वालों को तो भोजन वस्त्र तक भी न मिले, पर धन के प्रभाव से उच्चता का मान भरने वालों के मान में तनिक भी अन्तर न पड़े। अमीरों के आराम के लिये गरीबों का बलिदान किया जाय।

भारत का शासन-भार न्याय और शान्ति के नाम पर इतना अपव्ययी बनाया गया है जैसा कि पृथ्वी पर शायद ढूंढ़ने से भी न मिले। जो काम थोड़े व्यय से हो सकता है वह जान बूझ कर व्ययी बनाया गया है। कितने ही योग्य देश-

वासी भले ही भूखों मरें पर देश का रुपया थोड़े से उच्चा-
धिकारियों पर पानी की भाँति बहाया जावे। दीन भारत इतने अपव्ययी और अधिकव्ययी शासन-भार को सहन करने में अशक्य है। और न इस प्रणाली की उसे आवश्यकता ही है। खुशामदी टट्टुओं को तो लादने को रुपये मिलें, पर वास्तविक योग्य व्यक्ति दिन रात अपनी मस्तिष्क शक्ति को इस चिन्ता में खर्च करें कि किसी प्रकार उनके और उनके कुटुम्ब के पेट तो भर जाँय। वास्तव में भारत अब लुटेरों का शासन और अन्याय नहीं सह सकता। दीन मज़दूरों और किसानों की दशा दिन प्रतिदिन शोचनीय होती जा रही है। लोग कमज़ोर हो गये; उनकी उम्रें कम हो गईं। इन सब का मूल कारण क्या है? केवल निर्धनता—जो अपव्यय से उत्पन्न होती है।

किसी देश के लिये वही शासन हितकर हो सकता है जिसमें वहाँ की प्रजा सुखी हो। यदि कहीं पर केवल थोड़े से लोग धन की लालच देकर शासन-प्रबन्ध में योग देने के लिये केवल इसलिये साथी बना लिये जाँय कि वे क्रूर अत्याचारों के छिपाने तथा अत्याचार के कामों में सहायक बनें, तो वह केवल यही प्रमाणित करता है कि उस देश की सरकार प्रजा-हित के लिये राज्य नहीं करती है, बल्कि अपने स्वार्थ के लिये अपने साथ कुछ देशी शिक्षित लुटेरों और घर के भेदियों को भी मिला रक्खा है ताकि उनके स्वार्थ में कोई बाधा न पड़े। क्या यह न्याय का शासन है? क्या ऐसा शासन कभी टिकाऊ हो सकता है? जहाँ के न्यायालयों में दिन दहाड़े कर्मचारियों द्वारा प्रजा ठगी और लूटी जाय और वहाँ की सरकार उनके इस कृत्य पर आँख मूँदे रहे, क्या प्रमाणित

करता है ? क्या यह उत्तरदायी शासन हो सकता है या कभी प्रजा की भक्ति और सहानुभूति ऐसी सरकार की ओर हो सकती है ? ठीक यही दशा भारतवर्ष की है। प्रजा को क्षीण और निर्बल बनाने के जितने वैज्ञानिक साधन प्राप्त हो सकते हैं, उन सब से बराबर निःसंकोच हो चतुराई के साथ निरन्तर काम लिया जा रहा है।

प्रजा के हित के लिये कार्य करना, राजा या सरकार का धर्म है। उसका यह धर्म नहीं कि प्रजा-मत के विरुद्ध नियम बनावे और उन्हीं का अहित करे। प्रजा को इतना अधिक अधिकार है कि वह अपने हित करने वाले नियम का भी खंडन कर सकती है। सारांश, राजा या सरकार प्रजा का दास है और उसको अधिकार नहीं कि उसके विरुद्ध वह कोई कार्य करे। जब कहीं की सरकार अपनी मर्यादा का उल्लंघन कर प्रजा पर अत्याचार करती है तब प्रजा उसके प्रति राज्यक्रान्ति कर और उसे नष्ट कर अपनी इच्छा के अनुसार किसी दूसरी तरह की सरकार को जन्म देती है। रूस की राज्यक्रान्ति इसी सिद्धान्त के बल पर हुई। रूसी प्रजा अपने राजा के अत्याचारों को सहन न कर सकी और उसे अपनी स्वतंत्रता का परम बाधक समझ कर प्रजासत्तात्मक शासन को जन्म दिया।

बिना स्वराज्य के हम इस निर्धनता से देश को बचा नहीं सकते। इस प्रकार के सभी कष्टों को दूर करने का एक मात्र उपाय स्वराज्य है और यह जब तक हमें न मिल जाय तब तक हमें शान्त न होना चाहिये। हमें यह भली भाँति विदित है कि हमारी आवश्यकतानुसार इस देश में सभी वस्तुयें वर्तमान हैं तो इस बड़ी महगी का हमें कोई कारण नहीं प्रतीत होता। भारत की उत्पन्न हुई वस्तुयें पहले भारत के लिये,

फिर संसार के लिये हैं । जब हमारा स्वराज्य स्थापित हो जायगा, तब हमें इस महंगी और निर्धनता से छुटकारा मिल जायगा। यही भाव हमें स्वराज्य मार्ग पर अग्रसर कर रहा है।

स्वतंत्रता-प्रेम। जगत के प्राणी मात्र स्वतंत्रता-प्रिय होते हैं। जन्म से पिंजड़े में पला हुआ पक्षी भी अवसर मिल जाने पर उड़ने का प्रयत्न करता है, क्योंकि वह स्वतंत्रता के आनन्दों को, और सुखों से अधिक गुरुतर समझता है। स्वतंत्रता से उत्पन्न हुआ वृक्ष या पौधा कुछ दूसरा ही दृश्य रखता है। क्या चर क्या अचर यह भाव सब में वर्तमान है और जगत इसके गुण को मानता है। स्वतंत्रता सभी को प्रिय होती है।

अंग्रेज़ी शासन के कई गुणों से पूरित होते हुए भी प्रत्येक भारतवासी के हृदय में स्वतंत्रता की लहर उमंग मार रही है। स्वतंत्रता की सूखी रोटी को वह पराधीनता की विलासिता से उच्चतर स्थान देता है । अपने इधर उधर के दृश्यों पर दृष्टि डालते हुए भारतवासी अब पराधीनता के जुए को अपने गले से निकालना चाहते हैं और फिर एक बार स्वतंत्रता-देवी की गोद में बैठना चाहते हैं। उन्हें अङ्गरेज़ जाति से कोई घृणा नहीं । उन्हें उनकी चालों में दोष नहीं । पर स्वतंत्रता के उपस्थित होते ही उन्हे ब्रिटिश-सम्बन्ध भी भूल जाना पड़ता है। इस स्वतंत्रता का केवल एक मार्ग–स्वराज्य– उनके सामने है।

जिस स्वतंत्रता के लिये इंगलैंड अपने बच्चे बच्चे तक का खून बहाने पर उद्यत है, क्या वही स्वतंत्रता वह औरों में नहीं देख सकता? जिस भाव ने योरोप की छोटी छोटी जातियों को जीवित रक्खा है तथा जापान के इतिहास को इतना चमत्कारित बना रक्खा है, क्या वह भारतवासियों की रग

रग में प्रवेश कर उन्हें उसके लिये अपना सर्वस्व निछावर करने पर उद्यत नहीं कर सकता? भारतवासियों का यह भाव स्वाभाविक है और वह दबाया नहीं जा सकता।

एशियायी भाव। भारतवर्ष एशिया महाद्वीप का एक प्रधान अंग है। एशियायी भावों का जीवित रखना उसका एक बड़ा महान एवं पवित्र धर्म है। एशिया अपने प्राचीन भावों को योरोप की सभ्यता पर बलिदान नहीं कर सकता है। वह अपने महत्व का उससे श्रेष्ठतर स्थान देता है। भारत स्वयं अपनी प्राचीन सभ्यता का घमंड रखता है। वह प्रलोभन में पड़कर अपने वास्तविक धर्म और भाव को नहीं छोड़ना चाहता।

भारत धार्मिक शासन चाहता है। दिखावे का काम उसे कभी पसन्द नहीं है। योरोपीय सभ्यता के प्रहारों से वह घबड़ा उठा है। वह अपनी प्राचीन सभ्यता और गुणों का आदर करना चाहता है। वह हंस बन कर पश्चिमी सभ्यता से केवल दूध ग्रहण करना चाहता है पर पानी नहीं, ब्रिटेन और भारत के भावों में बड़ा अन्तर है। पूर्वीय धर्म-महत्व को पश्चिम नहीं समझ पाता।

भारत में लोग सदा से साधारण जीवन व्यतीत करने और उच्च विचारों में अपना समय बिताने के आदी रहे हैं। उन्हें सांसारिक झगड़ों में इतना व्यस्त होना पसन्द नहीं है। यहाँ की जल-वायु और अन्य दशाओं ने भारत को सादे वास्तविक जीवन के योग्य बनाया है। वह अपने शासन ढंग में एशियायी भाव देखना चाहता है। हम शासन भार को इतना खर्चीला नहीं रखना चाहते। योरोप की श्रेणी-भिन्नता हमें प्रिय नहीं। हम प्रथम अपने देशके अधभूखों का पेट

भरना चाहते हैं, फिर अपना धार्मिक जीवन और शासन चाहते हैं। हम जीवन निर्वाह के भार को बढ़ाना नहीं चाहते, हमें श्रमजीवियों और पूंजी वालों के दिन रात के झगड़े भी पसन्द नहीं हैं। हमारा लक्ष्य शान्तमय जीवन है। पर उसको प्राप्त करने के लिये हमें जापान की शूरता और अध्यवसाय की सुध है।

संसार--शासन--पद्धति का अनुभव। सबसे अन्तिम कारण जिससे भारत में स्वराज्य की जागृति हो उठी है, वह संसार-शासन-पद्धति का अनुभव है। भिन्न भिन्न देशों की भिन्न भिन्न शासन-प्रणालियाँ हमें प्रजा-सत्तात्मक राज्य की आवश्यकताओं और उपयोगिता की ओर विवश कर रही हैं। किसी देश का शासन अपने ही देशप्रतिनिधियों द्वारा अपने ऊपर किया जाना, शासन की पूर्णता दिखलाता है। विदेशी जाति के कितने ही सभ्य होने पर भी उसका शासन आधीन-देश के लिये कल्याणप्रद नहीं हो सकता। शासन की अन्य प्रणालियाँ भी उस आदर्श तक नहीं पहुँचतीं।

भारत अपना स्वराज्य और उत्तरदायी शासन चाहता है। सहस्रों वर्ष का अनुभव उसके सामने है। वह अधिकारी-वर्ग के अत्याचारी शासन से व्याकुल हो उठा है। भारत-वासी देश प्रबन्ध में अपना स्वर सुना चाहते हैं हम उत्तरदायी शासन चाहते हैं; और प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा अपना शासन प्रबन्ध चाहते हैं। हमें अपने देश निवा-सियों की स्वराज्य-योग्यता में पूर्ण विश्वास है और यह भी विश्वास है कि हमारे लिये यही शासन ढङ्ग अधिक उपयुक्त होगा। बिना शासन डोर अपने हाथ में लिये हम अपना यथेष्ट प्रबन्ध और सुधार करने में सफल न होंगे। हम उत्तरदायी

पूर्ण स्वराज्य ही में अपनी मुक्ति देखते हैं और केवल इसी द्वारा अपने उद्धार होने की आशा रखते हैं। संसार की दशा देख कर और उसके अनुभव से ही भारत को यह ज्ञान प्राप्त हुआ है।

स्वराज्य-स्थापन की आवश्यकता के इन भावों से प्रेरित होकर भारत ने अपना दृढ़ संकल्प कर लिया है कि वह इसे अवश्य प्राप्त करेगा—कार्य सिद्धि का मार्ग चाहे जो कुछ हो—और बिना किसी देर के शीघ्र से शीघ्र वह अपनी शासन-प्रणाली को बदलने के लिये तुला हुआ है। इसकी प्राप्ति के लिये चाहे हमें आपत्तियों का समुद्र ही क्यों न पार करना पड़े, पर भारतवर्ष के लिये स्वराज्य प्राप्त करना हमारा अभीष्ट है और हमारा कर्तव्य है कि यथाशक्ति देश उद्धार के लिये हम अग्रसर हो कार्यकर्ताओं के हाथ बटायें। यह समय हमारे लिये अत्यन्त उपयुक्त है और इस समय दैवी प्रेरणा ही से हमारे हृदयों में यह लहर उठी हुई है, जिसका वेग क्रमशः दिन दूना रात चौगुना होता जाता है। यदि हम उत्साह पूर्वक उद्योग करेंगे तो हमें इसकी अन्तिम सफलता में तृण-मात्र भी सन्देह नहीं हो सकता। सन्देह का स्थान ही कहाँ है जब कि ३२ करोड़ जनता उसकी प्राप्ति के लिये उत्सुक और कटिबद्ध है।



कांग्रेस महासभा ।

भारत की राष्ट्रीय महासभा, कांग्रेस अपने जन्मकाल से अब तक बराबर इसका प्रयत्न करती आरही है कि किस प्रकार भारत के राजनैतिक स्वत्वों और अधिकारों की रक्षा और उनकी वृद्धि की जाय। इस पथ पर वह बराबर अग्रसर होती रही है जब तक कि उसने भारत में पूर्ण स्वराज्य की घोषणा न करदी।

गत दिसम्बर १९२० में समस्त भारत वर्षीय कांग्रेस महासभा ने ३०,००० प्रतिनिधियों की उपस्थिति में, नागपूर अधिवेशन में, यह घोषणा कर दी कि उसका उद्देश्य भारत के लोगों द्वारा समस्त न्यायानुकूल और शान्तिपूर्ण मार्गों से भारत के लिये स्वराज्य प्राप्त करना है ?

कांग्रेस ही भारत की वह सर्वप्रधान और मान्य महासभा है जिसका आदर प्रत्येक भारतवासी के हृदय में सर्व श्रेष्ठ स्थान पाता है। वह अन्य राजनैतिक संस्थाओं से कहीं अधिक महत्व रखती है और उसका निर्णय मानना और उसका पालन करना प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य और धर्म है।

अब कांग्रेस ने बड़े सोच विचार के साथ इतनी बड़ी संख्या के बीच में अपने निर्णय की घोषणा कर दी, तो उसके प्रति हमारा क्या कर्तव्य रहा जाता है? चाहे हम उससे सहमत हों या नहीं यह हमारा धर्म है कि हम उसकी आज्ञा का पालन करें। इस समय हमें अपने पक्षपातों और विरोधभावों को दूर कर देना चाहिये और अत्यन्त प्रेम और सहयोग के

साथ उसकी आज्ञा पालन करनी चाहिये। स्मरण रखिये यदि आपने कांग्रेस और उसके नेताओं के आदेश को पूर्ण रीति से पालन न किया तो स्वराज्य न प्राप्त होने का कलंक कांग्रेस या उसके नेताओं पर न लगेगा बल्कि आपके ऊपर; और साथ ही अन्याय का शासन भी कम न होगा।

राष्ट्रीय महासभा ने केवल अपने उद्देश्यों ही की घोषणा नहीं की है, बल्कि उनको कार्यरूप में परिणित करने के साधन भी बतलाये हैं। उन साधनों का यथाशक्य पालन करना प्रत्येक भारतवासी–चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, सिक्ख हो या पारसी, जैन हो या ईसाई–का कर्तव्य है। यह राष्ट्रीय महायज्ञ है। इसमें सब को आहुति देनी उचित है। जितनी ही प्रेम और एकता की अच्छी आहुति छोड़ी जायगी, यज्ञ की सफलता में उतनी ही अधिक आशा होगी और फल शीघ्र मिलेगा।

यह आत्म-प्रायश्चित्त का समय है। हमें अपने पूर्व पापों के लिये प्रायश्चित्त करना है। समय स्वार्थ-त्याग का है। विलासों और अवगुणों को दूर करने का है। इस समय देश-हित के लिये हमें कष्ट उठाने पड़ेंगे; स्वार्थत्याग करने पड़ेंगे। विदेशी विलासिता छोड़नी पड़ेगी। स्वदेशी वस्तुओं का आदर और प्रचार करना पड़ेगा। अपने संघ को बलवान और प्रभा-वशाली बनाना पड़ेगा।

स्वराज्य-प्राप्ति का मार्ग सरल नहीं है। उसके लिये कठिन तपस्या और राष्ट्रसेवा की आवश्यकता है। उसके मार्ग में अनेकों कठनाइयाँ हैं। हमें उनपर क्रमशः विजय प्राप्त करनी है। हमें शान्ति और धैर्य से कार्य करना चाहिये और अपने सब कामों में पूर्ण उत्साह और उद्योग दिखलाना चाहिये।

एक एक अंश पूरा करते हुए हमें बराबर अग्रसर होते रहना चाहिये।

हमें स्मरण रखना चाहिये कि हमने असम्भव को संभव करने का बीड़ा उठाया है। प्रत्येक भारतवासी को अपने उत्तरदायित्व और कर्तव्य का पूर्ण ध्यान रखना उचित है। कार्य की सफलता ही हमारे विजय की चिन्ह होगी और तभी भारत के दुःख दरिद्र दूर होने की आशा होगी। जब तक कार्य सिद्धि नहीं होती हमें निरन्तर अविश्राम कार्य करना पड़ेगा—चाहे मार्ग में कैसी ही कठिनाई क्यों न उपस्थित हो जाय। समय समय पर कांग्रेस कमेटी जो आज्ञा देती रहेगी उसे प्रत्येक भारतवासी का धर्म होगा-उसके प्रतिकूल चलना पाप होगा।



अंग्रेजी शासन।

स्वराज्य का तथा स्वराज्य प्राप्ति के साधनों का सर्वाधिक सम्बन्ध ब्रिटिश शासन से है, क्योंकि उसी शासन-प्रणाली के साथ उसका घोर युद्ध है। इस सम्बन्ध में अनेकों प्रश्न हो सकते हैं। क्या अंग्रेजी-शासन भारत को स्वराज्य दिलाने में सहायक बनेगा अथवा उसके मार्ग में बाधक होगा। यही दो प्रश्न अधिक महत्त्व रखते हैं।

भारतवर्ष में ब्रिटिश-शासन ऐतिहासिक दृष्टि से बड़े महत्त्व का है। उसका सम्बन्ध भारत से प्रायः १५० वर्ष से ऊपर का है। उसने भारत-शासन-भार एक ऐसे समय में ग्रहण किया था जब कि देश की दशा अच्छी न थी। देश में अशान्ति थी। हम अंग्रेजी शासन के प्रति अपनी असीम कृतज्ञता प्रगट किये बिना नहीं रह सकते। उसने देश में शान्ति स्थापन करने और शिक्षा के प्रचार करने में बड़ा भाग लिया है। इंगलैंड से भारत ने बहुत कुछ सीखा है और वह इस कृतज्ञता को कभी भुलाना नहीं चाहता।

पर अब भारतवर्ष का रूप बदल गया है। दशायें कुछ और हैं। परन्तु नौकरशाही अब भी अपनी ही डफली बजाने में व्यस्त है। वह अपना पुराना रोब क़ायम रखना चाहती है। उसे प्रजा की पीड़ा का कुछ दुःख नहीं। वह अपनी लूट जारी रखना चाहती है। उसकी दृष्टि में प्रजा की कुछ इज़्ज़त नहीं। वह अपनी शक्ति के घमंड में चूर है। वह साधारण बातों में भी शस्त्र-प्रयोग करने लगती है। उसे अपनी

अयोग्यता का स्मरण नहीं, पर अपने अधिकार छीने जाते देख उसकी छाती फटी जाती है। उसका विश्वास दमन-नीति और बलप्रदर्शन में है। ऐसा होना अस्वाभाविक भी नहीं है। स्वार्थ किसे प्यारा नहीं है ? और विशेषतः उसे जो जन्म ही से उसमें पला हो। स्वार्थी अपने स्वार्थ को सहज ही में नहीं छोड़ दिया करते।

स्वराज्य-प्राप्ति के साधन असहयोग रूपी कटारी ने नौकरशाही रूपी वृक्ष की जड़ पर अपना काम प्रारम्भ कर दिया है। उसके आघात से व्याकुल होकर वह जलते हुए वन के साँप की भाँति घबड़ा उठी है। अपकारी को स्वयं अपने कर्म का फल मिलता है। अत्याचारों की भी सीमा होती है। परन्तु जिस नौकरशाही ने अपने गर्व के ज़ोर में स्वेच्छाचारिता की सीमा पार कर दी, उसके लिये किसी मनुष्य के हृदय में सहानुभूति कहाँ तक हो सकती है ? सभी उसकी नष्टता चाहते हैं। उसने अपनी मान-मर्यादा स्वयं आप खोदी और यह प्रमाणित कर दिया कि न्याययुक्त या अच्छे शासन की योग्यता अब उसमें न रही। न तो वह भारतवर्ष के योग्य रही, न तो भारतवर्ष उसके योग्य रहा। वह अब समूल नष्ट हुआ चाहती है।

<u>अंग्रेज जाति</u>। नौकर शाही और अंग्रेज़ जाति के विचारों में बड़ा अन्तर है। अंग्रेज़ जाति नौकर शाही के कृत्यों से कलंकित नहीं हो सकती, वह अपने गुणों के लिये प्रसिद्ध है। न्याय-प्रियता, स्वतंत्रता-प्रेम, देश-भक्ति और कर्तव्य-परायणता में वह अपनी समता नहीं रखती। भारत को अंग्रेज़-जाति से अवश्य कई शिक्षायें ग्रहण करनी हैं।

अंग्रेज़-जाति स्वयं स्वतंत्रता प्रेमी है। वह किसी की स्वतंत्रता अपहरण करने में कभी प्रसन्न न होगी। गत योरोपीय महाभारत में सम्मिलित होने का सब से बड़ा कारण, उसने यही दिया था कि वह कमज़ोर और छोटी २ जातियों और देशों की स्वतंत्रता की रक्षा करना चाहती थी। योरोपीय महायुद्ध स्वतंत्रता की रक्षा करने और स्वेच्छाचारिता का मान हरने ही के लिये हुआ था। भारतवासियों को अंग्रेज जाति से कोई शिकायत नहीं है। उस बीर जाति की कितनी ही आत्मायें हमारे स्वत्वों की रक्षा करने और हमें स्वराज्य दिलाने के लिये तन, मन, धन से सहायता कर रही हैं।

नौकरशाही के अपराधों से ब्रिटिश जाति सुरक्षित है। भारत को स्वराज्य प्राप्त करते देख, उस जाति के सच्चे हृदय अवश्य प्रसन्न होंगे, खिन्न नहीं; क्योंकि वे उसके गुणों से परिचित हैं। हमारे स्वराज्य प्राप्ति में हमें ब्रिटिश जाति से कुछ डर नहीं है। क्योंकि उस जाति के सच्चे गुणों से हम परिचित हैं। यदि कोई आशंका हो सकती है तो केवल इस कारण कि नौकर शाही अपने कृत्यों को छिपा लेती है और सब दोष भारत वासियों के सिर मढ़ देती है। इन्हीं कारणों से ब्रिटिश-शासन से घृणा होते हुए भी हमें ब्रिटिश जाति से रंचित मात्र द्वेष या घृणा नहीं है। हम उनको आदर की दृष्टि से देखते हैं। हम उनके गुणों की प्रशंसा करते हैं, पर हम उनके अवगुणों के साथी नहीं हैं।

इंगलैंड का कर्तव्य। इंगलैंड एक स्वतंत्र प्रिय देश है। वह संसार की स्वतंत्रता की रक्षा करने का दम भरता है। अब देखना यह है कि भारत की स्वतंत्रता की ओर उसकी क्या नीति होती है। इंगलैंड की परीक्षा का समय उपस्थित है।

अब उसकी सच्ची नीति का लोगों को पता लग जायगा। हमें मालूम हो जायगा कि उसकी स्वतंत्र प्रियता केवल योरोपीय देशों ही के लिये है अथवा अन्य देश के राष्ट्रों के लिये भी। क्योंकि भारतवासियों ने एक स्वर से अपनी इच्छा स्वराज्य के पक्ष में प्रगट कर दी है।

इंगलैंड की नीति अब तक हमारे लिये अधिक आशा प्रद नहीं है। उसकी स्वतंत्रप्रियता स्वार्थ से भरी है। आयरलैंड का उदाहरण हमारे नेत्रों के सामने है। भारतवर्ष और आयर-लैंड में बहुत अन्तर है। वह भारत की अपेक्षा इङ्गलैंड के अधिक समीप है। जब समीप की यह दशा है तो दूर की दशा का अनुमान भलेही किया जा सकता है। इंगलैंड की कूटनीति प्रसिद्ध है। हाथी के दाँत के ऐसे प्रगट में वह कुछ और भेष रखता है पर गुप्त रीति से उसकी इच्छा कुछ और रहती है, राजनीति में अन्य देशों को ठगने और उन्हें मूर्ख बनाने ही में वह अपना गुण मानता है।

एक देश दूसरे देश पर या तो उसकी प्रसन्नता से या अपने बल के ज़ोर से शासन कर सकता है। भारत के विषय में अब स्पष्ट है कि इंगलैंड उसपर उसके निवासियों की प्रसन्नता से राज्य नहीं कर रहा है। वह भारत पर तलवार के ज़ोर से शासन करना चाहता है। तलवार के ज़ोर का शासन कभी स्थायी नहीं हो सकता। उसकी अवधि केवल उसी समय तक है जब तक कि शासित जाति उससे अपना अधिकार छीन लेने के योग्य नहीं हो जाती। जल्द या देर में ऐसा होना अवश्य है। यह प्रकृति का नियम है इसमें किसी का कुछ वश नहीं। या इस प्रकार का व्यवहार दोनों देशों में

महाद्वेष और घृणा फैला देता है और मित्रता के स्थान में शत्रुता को जन्म देता है ।

दैवेच्छा से भारत इंगलैंड को धरोहर सौंपा गया था। यह उस समय में हुआ था जब कि भारत अशान्ति से अधीर हो चुका था। इंगलैंड को इस धरोहर की रक्षा के बदले उसकी प्राकृतिक दशाओं से उस समय तक लाभ उठाने की आज्ञा थी जब तक कि धरोहर को लौटा लेने का समय नहीं आता। अब दशायें बदल गई हैं। अब धरोहर को लौटा देने का समय आ गया है। पर इंगलैंड इसके लिये तैयार नहीं है। वह उस धरोहर के लौटाने में आगा पीछा कर रहा है। उस धरोहर के लाभों से उसके हृदय में लालच समा गई है। उसे लौटाने में उसे दुःख होता है। अपने विश्वास की बात भुलाकर वह उस पर अपना अधिकार जमाना चाहता है और साथ ही भारत को अपनी निजी सम्पत्ति समझने लगा है क्योंकि भारत के लाभों से इसके हृदय में मोह उत्पन्न हो गया है। यह स्वार्थ-नीचता का विचार है।

इंगलैंड अपने धर्म को भूल रहा है । यदि उसकी यह आन्तरिक इच्छा है कि भारत और उसका सम्बन्ध बना रहे तो वह उस सम्बन्ध को बनाये रखने के लिये इस नीति से काम न ले । कोई मनुष्य किसी को संकट और दबाव में डालकर उसकी बलहीनता से चिरस्थायी मित्रता नहीं प्राप्त कर सकता । ऐसा करने से भविष्य में वह उसे अपना शत्रु बना देगा। भारत और इंगलैंड की मित्रता चिरस्थायी रह सकती है, पर वह भारत की पराधीनता से नहीं बल्कि दोनों राष्ट्रों के बराबरी के नाते से। इसी सम्बन्ध से एक दूसरे से

लाभ उठा सकता है, अन्यथा नहीं। इंगलैंड को भारत की स्वतंत्रता में अपना हित मानना चाहिये।

इंगलैंड इस बात को जानता है कि वह भारत पर सदा शासन नहीं कर सकता—यह असंभव और अस्वाभाविक है। जब जल्द या देर में किसी न किसी दिन उसे भारत से हाथ धोना पड़ेगा तो वह अपने नाम को यशस्वी बनाये रखने के लिये अच्छे मार्ग का अवलम्बन क्यों नहीं करता! क्या आयरलैंड का उदाहरण उसके लिये यथेष्ट नहीं है! जब वह आयरलैंड पर अपना प्रभुत्व बनाये रखने में अशक्य हो रहा है तो भारत को अधीन रखने की बात तो मृग-तृष्णा है। केवल स्वप्न मात्र है।

इंगलैंड लालच में पड़कर भारत को न छोड़े, यह उसकी इच्छा है। पर यह उसके यश को मिटा कर, उस पर कलंक लगाने का कारण बनेगा। अभी इंगलैंड के सामने वह शुभ समय वर्तमान है, जिसका उचित उपयोग कर वह सदा के लिये यशस्वी बन सकता है। पर तनिक सी भूल होने से उसे जन्म भर पछताना पड़ेगा। पराधीन भारत इंगलैंड को थोड़े से आर्थिक लाभ के अतिरिक्त कुछ और नहीं लाभ पहुंचा सकता। स्वतंत्र भारत इंगलैंड का मित्र बन कर उसे विजय और कीर्ति की चोटी तक पहुंचा सकता है। जब तक भारत के नेत्र नहीं खुले थे उसे दबा कर उसपर शासन करना इंगलैंड के लिये सहल भी था। पर अब वह बात नहीं रही। भारत की वर्तमान जागृति को दबाने में इंगलैंड को लोहे के चने चबाने पड़ेंगे तो भी वह सफलता से वंचित रहेगा। अन्त में उसके उच्च मस्तक पर केवल कलंक ही का

टीका दिखलाई पड़ेगा और उसकी नीति उसके लिये हानिकारक प्रमाणित होगी। नौकरशाही उसके लिये काल बनेगी।

ब्रिटिश जाति और इंगलैंड का व्यवहार भारतवासियों के प्रति अब अन्य स्वरूप धारण करना चाहिये। भारत और इंगलैंड का सम्बन्ध इतने दिनों का हो चुका है कि इंगलैंड का धर्म भारतवर्ष के प्रति बड़े उत्तरदायित्व का हो चुका है। वह लोभ से नहीं बल्कि अत्यन्त शुद्ध भाव से भरा होना चाहिये। यदि स्वतंत्रता-प्रिय इङ्गलैंड भारत को स्वतन्त्र नहीं बना सकता तो क्या वह अपने उस गुण का गर्व कर सकता है। यदि अपने साथी को उचित इच्छाओं के पूर्ण करने में इंगलैण्ड ने उसे सहायता न दी, तो क्या वह भारत के शुद्ध हितैषी होने का कभी घमंड कर सकता है? कदापि नहीं।

ब्रिटिश जाति का धर्म है कि वह शुद्ध हृदय और प्रेम से भारत को पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने में उसकी सहायता करे उसके साथ सहानुभूति और प्रेम प्रगट करे और भारतवासियों को आदर की दृष्टि से देखे। उनके गुणों और भावों को समझने का प्रयत्न करे और उन्हें सब प्रकार योग्य और बलवान बनाने में उनकी सहायता करे। बिना किसी पारितोषिक की आशा किये हुए भी भारत के साथ परोपकार और प्रेम करना ब्रिटिश जाति का धर्म होना चाहिये, क्योंकि अंग्रेज़ों के इस गुण को भारत बड़ी उच्च दृष्टि से देखता है। क्या भारतवासियों को स्वतंत्र देखकर एक सच्चे अंग्रेज की आत्मा को सन्तोष और सुख न प्राप्त होगा?

यदि भारत अपने स्वराज्य अथवा स्वतंत्रता प्राप्ति करने में किसी अन्य देश से कुछ आशा रख सकता है तो सबसे प्रथम और सबसे अधिक आशा वह इंगलैंड से कर सकता

है। भारत को इस समय पूर्ण स्वराज्य का प्राप्त कराना, इंग-लैंड का वह मुख्य धर्म है जिससे उसे विमुख न होना चाहिए। स्वराज्य के प्रति शत्रुता दिखलाना नहीं बल्कि उसकी प्राप्ति में सहायता देना ही इंगलैंड का इस समय सच्चा कर्तव्य है।

स्वराज्य तो भारत प्राप्त करही लेगा चाहे इंगलैंड उसकी सहायता करे या न करे। यह प्रश्न केवल समय का है। इस समय के शीघ्र आने में इंगलैंड भारत की सहायता कर सकता है, क्योंकि वह बलवान और योग्य है। इस समय इन दोनों देशों में जो घनिष्ट सम्बन्ध है उससे भारत स्वराज्य पाने में इंगलैंड से सहायता की आशा कर सकता है और इस सहायता का देना इगलैंड को अपना पवित्र धर्म समझना चाहिए। भारत को इस समय सहायता देने से भविष्य में इंगलैंड के स्वार्थ की स्वयं रक्षा हो सकेगी। इंगलैंड इस समय भारतको पूर्ण स्वराज्य तथा स्वतंत्रता दिलाकर इतिहास में अपना नाम अमर कर सकता है। परन्तु इस अवसर पर चूकने से सिवाय भूल और पश्चात्ताप के और कुछ हाथ न लगेगा। आयरलैंड का प्रश्न फिर भी उसे स्मरण दिलाना चाहिये।



वर्तमान दशा।



भारत में स्वराज्य की प्रबल इच्छा उत्पन्न होने का वर्णन प्रारम्भ में किया जा चुका है। जो दशायें आज भारत में वर्तमान हैं, उनसे हमारा दिल दुखा जा रहा है। शताब्दियों की लूट से भारत में अब दम नहीं रहा। वह भूखों मर रहा है। इसका खून चूस लिया गया है, केवल अस्थि मात्र शेष है। विदेशी लुटेरों ने देशी लुटेरों को तैयार करके उनकी सहायता से देश को खूब लूटा और वे अपने लूट की मात्रा को दिन प्रतिदिन बढ़ाते ही जा रहे हैं। दीन भारत के लिये इतने खर्चीले शासन-भार की क्या आवश्यकता है? क्या संसार में कोई और देश भी अपने शासन पर इतना अधिक व्यय करता है जितना कि भारतीय ब्रिटिश सरकार। जापान और संयुक्त राज्य अमेरिका, ये संसार में आदर्श राज्य माने जाते हैं। इनका शासन-भार भारत की अपेक्षा कितना कम है।

भारत की घोर दरिद्रता का कारण तो स्पष्ट है। जब कि दिन भर धूप में कड़ी मिहनत करने वाला किसान शाम को आधे पेट भी भोजन न प्राप्त कर सके और उसी की प्रगाढ़ कमाई का रुपया एक एक मनुष्य पर हजारों रुपये मासिक पानी की भाँति बहाया जावे, जोकि बिजली के पंखे के नीचे बैठ कर कुछ घंटों के लिये काम करनेवाला हो, तो दरिद्रता भारत को अपना घर क्यों न बनाये। सरकारी नौकरों को इतनी बड़ी तनख्वाहें देने का क्या बहाना (निर्दोषकरण) हो

सकता है ? उच्च सरकारी नौकरों का वेतन कई गुणा कम किया जा सकता है। इन नौकरों को अधिक वेतन देकर सरकार ने उन्हें गुलामी में खूब फाँस लिया है। उनकी अन्तरात्मायें निष्ठुर हो गईं, और वे अपने ऐश आराम में ऐसे फँसे हैं कि कभी उनके मनमें यह विचार भी नहीं उत्पन्न होता कि उनका एक भाई भूखों मर रहा है। उनके लिये धन का लोभ ही सर्वस्व है। चाहे आप उनका अपमान कर लीजिये पर उन्हें रुपया मिले। उनके इज़्ज़त की गणना रुपयों से होती है।

अब देखिये, यह रुपया किसकी सम्मति से व्यय होता है, क्या प्रजा का भी उसमें कुछ हाथ है ? नहीं। केवल एक छोटे से स्वार्थी दल ने ही इस लूट को आपस में बाँटने का प्रबन्ध कर रक्खा है। फिर ये लुटेरे अपने सरदार का साथ न दें तो क्या करें ? उन्हें तो इज़्ज़त नहीं बल्कि रुपया प्यारा है। क्या भारतीय जनता अब इस अन्याय को सहन कर सकती है ? कभी नहीं। उसने बहुत दिन तक देखा और सुना; अब उसमें सहन-शक्ति शेष नहीं रही। लुटेरी सरकार के शासन और कृत्यों से उसका जी ऊब उठा, अब वह अपनी इच्छानुसार शासन चाहती है, जिसका पहला सिद्धान्त होगा कि सब को भर पेट भोजन और वस्त्र मिले और किसी को खाने पीने का कष्ट न रह जाय।

भारत की लूट की अवधि यहीं पर समाप्त नहीं होती। लूट का माल समुद्र पार करके विदेश भी पहुंचता है। यहाँ के शिल्प और व्यवसायों का दमन बड़े नियम पूर्वक किया गया है ताकि वह किसी प्रकार अवरोधक न रहे। विदेशी व्यापारियों ने हमारे झोपड़ों के उद्योग और धन्धों को छीन

लिया और हमारे देशवासियों को भूखों मारने का सामान उत्पन्न कर दिया। हमारे कारीगरों और जुलाहों को निहत्था करके मैनचेष्टर की मिलें बनाई गई। सरकार और विदेशी व्यापारी दोनों भारत को लंगड़ा और दरिद्र बनाने के उद्योग में लगे हैं। बाहरी तड़क भड़क दिखला कर लोग धोखे में डाले जाते हैं और यह जाल दिन प्रतिदिन हमारे गलों में दृढ़ता से बंधतो जा रही है। साम्राज्य-रक्षक-सेना का व्यय भी भारत के माथे ठोंका जाता है। भारत में यदि छल बल से रुपया मिल सके, तो इङ्गलैंड उस रुपये को चूसने में तनिक भी आनाकानी नहीं करता।

जागृति। इस समय देश भर में स्वराज्य की जागृति हो गई है। अब लोगों की आँखें खुली हैं। जब देश भूखों मरने लगा, स्थान स्थान पर अपमानित होने लगा, अपनी लज्जा रखने में विवश होने लगा, तब उसे अपनी वास्तविक दशा का ज्ञान हुआ और वह अपने होश में आया। अब स्वराज्य का सन्देशा भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक छोटे छोटे झोपड़ों तक में पहुंच गया है। लोग उसके लिये अपना सर्वस्व निछावर करने पर तैयार हो रहे हैं। वर्तमान शासन-प्रणाली को तोड़कर स्वराज्य स्थापित करने की लालसा सब के हृदय में तरंग मार रही है। छोटे छोटे बच्चे भी प्रेम से स्वराज्य का गीत गा रहे हैं और उसी रंग में मस्त हैं। एक एक किसान और मजदूर भी सरकार के कृत्यों को खूब समझ गया है और अपने हित को पहचान कर उसके लिये माता की वेदी पर अपना शिर चढ़ाने को तैयार है। इन सब का कारण केवल नौकरशाही का अन्याय और हठ है।

इस जागृति ने देश में नवजीवन का प्रसार कर दिया है। छोटे बड़े तथा ऊँच नीच का भेद मिटा दिया है। हिन्दुओं और मुसलमानों को भाई भाई बना दिया है। देश की कुरीतियों का सुधार हो रहा है और ग्राम ग्राम में फिर प्राचीन प्रणाली अनुसार सच्चे स्वराज्य की देनेवाली पंचायतें कायम हो रही हैं। भारत की रहन सहन में परिवर्तन हो रहे हैं। अपना स्वदेशी कपड़ा फिर लोगों के हृदय में अपना उपयुक्त आदर प्राप्त कर रहा है और विदेशी कपड़े को लात मारकर उसे रसातल भेज रहा है। चर्खा इस समय चक्र का काम कर रहा है।

हमारे चर्खे के धन्धे को कलों से बने हुए विदेशी माल के संघर्षण से बचाकर उसकी उन्नति कर लेना साधारणतः कोई सरल काम नहीं है, पर स्वार्थ-त्याग द्वारा हम इस कठिन कार्य को अवश्य ही सुसाध्य कर सकते हैं। आर्थिक बन्धन के ढीले होते ही, आप देखेंगे कि हमारे राजनैतिक दासत्व के अन्य बन्धन आप से आप ढीले हो जायँगे। ईश्वर करे यह शुभ दिन शीघ्र आवे।

शुभ अवसर। भारतवर्ष को इस समय स्वराज्य प्राप्त करने का बहुत अच्छा अवसर प्राप्त है। संसार के वायुमंडल से 'स्वराज्य' की ध्वनि आ रही है। आज दिन जगत का कोई भी भाग ऐसा नहीं दीख पड़ता जिसके किनारे पर स्वातंत्र्य की उत्ताल तरंगे न टकरा रही हों। आयर्लैंड, पोलैंड, मिश्र, चीन, कोरिया, अर्मेनियाँ, प्रभृति सभी देश स्वतंत्रता के मूल्य को समझते हैं और उसको पूर्णतः प्राप्त करने के लिये कठिन उद्योग कर रहे हैं। जब इन देशों की यह दशा है तो भारतवर्ष के विषय में कहना ही क्या है। अपनी आर्थिक दृढ़ता और

आत्म-सम्मान के लिये भारत को बिना विलम्ब के पूर्ण स्व-राज्य प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है।

जो जागृति इस समय हमारे देश में उत्पन्न हो गई है, उसको दृढ़ करने के लिये और उसकी शक्ति से पूर्णतः लाभ उठाने के लिये हमें तन, मन, धन से स्वराज्य तथा स्वतंत्रता प्राप्त करने का उद्योग करना चाहिये। कांग्रेस ने बहुत सोच विचार कर अपने मंतव्य को स्थिर किया है। सौभाग्य से इस समय देश को सच्चे और आत्म-त्यागी नेताओं की सहायता भी मिल गई है। देश की अधिकांश जनता हमारे साथ है। देश की भीतरी तथा बाहरी सभी स्थितियाँ हमारे अनुकूल हैं। इस अवसर को हाथ से खो देना स्वयं अपने हाथों अपने पैर में कुल्हाड़ी मारना होगा। हमें अपनी शक्ति की परीक्षा करने का अवसर प्राप्त है। उसमें विश्वास कर हमें कार्य के लिये आरूढ़ हो जाना चाहिये।

भारतवासियों ने स्वयं अपनी आँखों देख लिया कि सुधारों से कुछ लाभ न हुआ। उलटा शासन-भार बढ़ गया। स्वराज्य देने की आड़ में सरकार वास्तविक स्वराज्य को अपनी दमन-नीति से नष्ट किया चाहती है और लोगों को झूठा आशाजनक आश्वासन दिलाकर अपनी न्याय-प्रियता और सच्चाई का विश्वास दिलाया चाहती है। सच्ची और स्पष्ट बातें कहने वाले उपद्रवी और राज्य-विद्रोही कहकर पुकारे जाते हैं। निरपराधी लोग पकड़ पकड़ कर जेलों में ठूँसे जा रहे हैं। अब प्रश्न हमारे सामने यह है कि या तो हम स्वराज्य लें और उसके लिये कष्ट भोगें या सरकार की झूठी प्रतिज्ञाओं और लालचों में पड़कर अपने देश को विदेशियों और लुटेरों के हाथ बेंच दें। जेल की डर और रुपये की लालच

एक ओर और स्वराज्य और कष्ट दूसरी ओर हैं। अब हमें सरकार या स्वराज्य में जो अधिक प्यारा हो उसका साथ देना चाहिये। दोनों की सेवा एक साथ होनी कठिन है। जब तक सरकार प्रायश्चित्त कर न्याययुक्त न बने उसका सहयोग कितने अंशों में ठीक है?

असहयोग का काम। स्वराज्य का जोश इस समय भारत के कोने कोने तक समा गया था। प्रायः सभी बड़े बड़े ग्रामों में निज की पंचायतें स्थापित हो चुकी हैं। सरकारी अदालतों में दाखिल होने वाले मुकदमों की संख्या बहुत कम हो गई है। चरखे का प्रचार और देशी कपड़े का व्यवहार दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। सहस्रों दीनों और विधवाओं को चर्खे ने नया आसरा दिया है। चक्ररूप चरखे के चमत्कार से बड़े बड़े घमंडियों और धन लोलुपों के नेत्र चकाचौंध हो रहे हैं। लंकाशायर की मिलें उसका मुख ताक रही हैं और उसके बल पर आश्चर्य प्रगट कर रही हैं। भारत के आर्थिक सुधार में इन दोनों कामों से बड़ी सहायता प्राप्त हो रही है।

देश भर में मेल की शृंखला दृढ़ होती जा रही है। हिन्दू और मुसलमान भाई भाई की तरह आपस में मिल रहे हैं। अछूत जातियों के सुधार का पूर्ण उद्योग किया जा रहा है। भारत के स्वराज्य में सबको उपयुक्त स्थान दिया जा रहा है। देश पवित्रता की ओर बढ़ता जा रहा है। मादक द्रव्यों का व्यवहार कम होता जा रहा है। छोटी छोटी जातियों ने पंचायतें कायम कर शराब का पीना छोड़ दिया है। एक अत्यन्त हानिकर शत्रु से लोगों की रक्षा हो रही है।

देश के वे नवयुवक और सभ्य पुरुष जिन्हें देश की दशा का ज्ञान है; जो देश की सेवा के लिये प्रस्तुत हैं और जो अपने

आत्म-सम्मान को समझते हैं, वे अपने अध्ययन, वकालतें तथा सरकारी नौकरियाँ भी उस समय तक के लिये स्थगित करते जा रहे हैं जब तक कि उन्हें पूर्ण स्वराज्य प्राप्त न हो जाय। देश के निस्वार्थी नवयुवक रातदिन कांग्रेस-मन्तव्यों के प्रचार में व्यस्त हैं। एक एक करके वे सरकारी कर्मचारियों द्वारा पकड़े भी जा रहे हैं। अपनी प्रतिज्ञानुसार स्वराज्य प्राप्ति हेतु वे प्रसन्न मुख हँसते हँसते जेलखानों को पवित्र करने जा रहे हैं। कठिन समस्याओं के उपस्थित होते हुए भी हमारे साहसी शूरवीर कार्यकर्त्ता सदा अपने पथ पर अग्रसर हो रहे हैं और अपने कार्य को द्विगुणित उत्साह से करते आ रहे हैं।

भविष्य। हमारा भविष्य अन्धकारमय नहीं है। जो कार्य हो रहा है वह सन्तोषजनक है। हमें पूर्ण विश्वास हो रहा है कि यदि दैवेच्छा से हमारा कार्य इसी उत्साह से होता रहेगा तो हमें अपने अभीष्ट फल के मिलने में देर न होगी। समय हमारे साथ है, हमें केवल संगठनपूर्वक भली प्रकार कार्य करने की आवश्यकता है। विदेशी कपड़े का पूर्ण बहिष्कार इस समय नितान्त आवश्यक है।

कार्यकर्ताओं को कार्य-पथ पर आरूढ़ रह कर अग्रसर होना है। बाधाओं के उपस्थित होने के कारण शूरवीरों का काम पीछे हटना नहीं है। इस समय मदान्धी नौकरशाही अपने स्वार्थ को नष्ट होते देख चोटीले साँप की तरह अवार करेगी। दमन-नीति अपने दल बल के सहित पूर्णतः काम में लाई जावेगी क्योंकि उस नौकरशाही को स्वयं अपने न्याय में विश्वास नहीं है। हमें अत्यन्त शान्ति रूप से क्रमशः अपना कार्य करना चाहिये। क्रोध का बदला क्रोध से न देना चाहिये।

एक समय वह आयेगा जब कि नौकरशाही को अपनी गलती सूझ जायगी और वह अपने कृत्यों के लिये पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त करेगी।

यह सच है कि हमारा स्वराज्य नौकरशाही की स्वच्छन्दता का नाश कर देगा। पर इसका प्रयोजन यह कभी नहीं है कि हम अंग्रेज़ों को अपने देश से बिल्कुल बाहर निकाल देना चाहते हैं। हम अंग्रेज़ों की सहायता के कृतज्ञ हैं और हम आनन्द के साथ उनसे मिलकर काम करेंगे, यदि वे हमारे कहने के अनुसार चले। परन्तु अपने स्वतंत्र देश में हम किसी प्रकार की भी नौकरशाही—चाहे वह अंग्रेज़ी हो और चाहे भारतीय—को नहीं रखना चाहते हैं। वर्तमान समय में कुछ नौकर लोग प्रजा के मालिक बनने का दम भरते हैं; हम चाहते हैं कि वे वास्तव में प्रजा के सेवक बनें, जैसे कि वे इंगलैंड में हैं।

संसार की प्रगति को रोकना भारत की नौकरशाही की शक्ति से बाहर होगा। हमें समता-पूर्वक कार्य करना है, क्रोध और अत्याचार स्वयं अपने को खा डालेंगे। अन्त में शान्ति और धर्म की जय होगी। यदि हमारा युद्ध सत्य के लिये है तो अवश्य हमारी विजय होगी। श्रीभगवान कृष्ण का वाक्य है—'सत्यमेव जयते नानृतम्'।



हमारा धर्म।

अब हमें क्या करना उचित है ? यदि हम कांग्रेस को देश की सार्वजनिक सर्वश्रेष्ठ राजनैतिक संस्था समझते हैं; यदि उसमें हमारा पूर्ण विश्वास है; यदि हम उसके द्वारा अपना हित देखते हैं, तो यह हमारा धर्म है कि कांग्रेस नेताओं द्वारा स्थिर किये हुए, उसके मन्तव्यों पर हम पूर्ण रीति से कार्य करें, चाहे उसके कार्य-विवरण के ढंगों के कुछ अंश से हम सहमत भी न हों। कांग्रेस-निर्णय हमारे लिये ब्रह्म-वाक्य होना चाहिये। यथा-शक्ति उसके पालन करने में हमारी भलाई है। हमारे लिये दो विचार नहीं हो सकते। कांग्रेस का एक निर्णय है, और यथाशक्य तन, मन, धन से उसका पालन करना हमारा कर्तव्य है।

कर्तव्य निर्दिष्ट हो जाने पर हमें कार्य करने के ढंगों पर विचार करना उचित है। स्वराज्य के लिये कार्य करनेवालों का युद्ध उस नौकरशाही और उसके थोड़े से साथियों से है, जो देश का धन दबाये बैठे हैं और अपने हाथ में शस्त्र-शास्त्र का बल रखते हैं। उन्हें इस बात का घमंड है कि यदि किसी में सच्ची देशभक्ति का भाव उत्पन्न हुआ, या जिसने स्वराज्य प्राप्ति के लिये सच्चा उद्योग किया तो उसका हम अपने बल से दमन कर देंगे। नौकरशाही को अपनी सेना, पुलिस, गोली, बारूद, कानूनों और साथियों में विश्वास है और इसी घमंड में वह चूर चूर हो रही है।

यह स्पष्ट है कि यह नौकरशाही अपनी शक्ति की हीनता

देख न सकेगी और सब प्रकार से दमन नीति ही का अवलम्बन करेगी। हमारे लिये उसका सामना तलवार से करना उचित न होगा। इसमें बहुत अधिक खून-खराबी की सम्भावना है। हम क्रोध का बदला क्रोध से नहीं चुकाना चाहते। यह आत्म-बल की हीनता है। हम शान्तिपूर्ण अ-सहयोग का युद्ध लड़ेंगे। हम क्रोध के बदले क्षमा का खड्ग ग्रहण करेंगे। हमारी शान्ति और क्षमता उनके बल का अन्त कर देगी।

इसलिये यह हमारा धर्म है कि हम अपने देशभाई—चाहे वह हिन्दू हो, मुसलमान हो, ईसाई हो या पारसी या जैन—के साथ मिल जुलकर अत्यन्त प्रेम के साथ कांग्रेस-मन्तव्यों का प्रचार करें। अपने शब्दों या कामों से हमें किसी के प्रति कोई कुत्सित या घृणोत्पादक भाव न उत्पन्न होने देना चाहिये। हमारा विरोध किसी जाति या व्यक्ति विशेष से नहीं है, बल्कि उस अन्यायी नौकरशाही सरकार के साथ है, जो हमारे मान मर्यादा को कुचलने में अपनी शेखी समझती है और जो हमारे पसीने की गाढ़ी कमाई को पानी की भाँति खर्च करती है। हमें अत्यन्त शान्ति के साथ उद्योग पूर्वक अपना संगठन कार्य करते जाना चाहिये। मार्ग में बाधा पड़ने पर घबड़ाना नहीं चाहिये। कांग्रेस के आज्ञानुसार हमें तन, मन, धन से कार्य करना चाहिये और सदा विश्वास रखना चाहिये कि युद्ध में सदा सत्य की जय और असत्य की हार हुआ करती है।

जातीय काम सहज में नहीं होता है। हमें प्रत्येक भारतवासी के हृदय में स्वराज्य के भावों को अंकित कर देना है। हमें यत्न पर यत्न, उद्योग पर उद्योग और परिश्रम पर परिश्रम करते रहना चाहिये और इस विचार को अपने देश के हरएक मनुष्य के मस्तिष्क में प्रविष्ट कर देना चाहिये। जब तक इस

काम में पूरी सफलता न मिल जाय, तब तक इस यत्न से हाथ को खींचना पाप है। स्वराज्य के भाव को प्रत्येक भारत-वासी के मस्तिष्क में कूटते जाइये, कूटते जाइये और फिर भी कूटते जाइये, जब तक कि यह बात उसमें पूरी तौर से न समा जाय; रात और दिन, उठते और बैठते, सोते और जागते, खाते और पीते, खेलते और कूदते, लिखते और पढ़ते हमें सदा सभी स्थानों और सभी दशाओं में सबसे स्वराज्य ही की बातचीत करनी चाहिये; इसी को सभी बातों, यत्नों और अध्यवसायों का केन्द्र बनाना चाहिये।

यह हमारी परीक्षा का समय है। हमें अपने आत्म-बल की दृढ़ता का संसार को प्रमाण दिखलाना है। स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। इससे हमें कोई वंचित नहीं रख सकता। स्वराज्य किसी के देने से नहीं मिला करता। यह आशा ही निराशा मात्र है कि कभी भी सरकार हमको स्वतः स्वराज्य देदेगी। स्वराज्य तो हमें स्वयं प्राप्त करना होगा। अपने पैरों के बल हमें स्वयं खड़ा होना पड़ेगा। हमें उसके लिये अत्यन्त कठिन तपस्या करनी पड़ेगी। सब स्वार्थों का त्याग करना पड़ेगा और कठिन से कठिन आपत्तियों और कष्टों का सामना करने के लिये तैयार रहना पड़ेगा। प्रत्येक भाई को यह जानना पड़ेगा कि वह कौन है, उसमें क्या शक्ति है, उसका दायित्व कहाँ तक है और उसका अधिकार क्या है। अपनी चेष्टा से, अपने पैर पर खड़े होकर अपना तथा दूसरों का श्रेय क्या है, वह इसके जानने की खोज में पड़े। नाना प्रकार की शिक्षा देकर, अज्ञ, दरिद्र तथा कुसंस्कार से भरे हुए भाइयों के मन को जगाना पड़ेगा।

हमारा लक्ष्य । हमारा लक्ष्य तो अब स्वराज्य है। पंजाब और ख़िलाफ़त के मामलों में सरकार का उचित न्याय करना भी अब दूर और देर की बात है। हम अपने शासन में अपना पूर्ण अधिकार रखना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे देश का शासन वैसाही हो जैसा कि हम चाहें। हम किसी के पराधीन नहीं रहना चाहते। हमारे देशवासियों को हमारे देश में वही स्वत्त्व प्राप्त होने चाहियें जैसा कि अमेरिका में अमेरिकनों को, इंगलैंड में अंग्रेजों को और जापान में जापानियों को है। हम अपने शासन में अपना पूर्णाधिकार और अपक्षपाती न्याय चाहते हैं। हम अपनी सेना, नौसेना, पुलिस, ख़ज़ाने और अन्य राजनैतिक मामलों में अपना पूर्णाधिकार चाहते हैं। हम अपने देश का शासन अपने देश के प्रतिनिधियों द्वारा ही कराना चाहते हैं ताकि हमें सच्चा न्याय प्राप्त हो सके। देश के धन का अपव्यय न हो तथा किसी को किसी प्रकार का कष्ट न हो। इसलिये हमें स्वराज्य की आवश्यकता है, सुराज (अच्छे शासन) की नहीं। इस लक्ष्य के प्राप्त करने में हमें किंचित मात्र भी विलम्ब न करना चाहिये।

हमको निडर रहना चाहिये और हमको स्वयं अपने ऊपर विश्वास रखना चाहिये। हमारी सफलता के रास्ते में एक मात्र काँटा यही है कि हम लोग अपने ऊपर विश्वास नहीं रखते हैं। हम जो चाहें कर सकते हैं, दृढ़ता और आत्म-विश्वास ही की कमी है। जिस चीज़ के पाने का हम दृढ़ निश्चय कर लें वह हमें अवश्य मिल जायगी। किसी भी चीज़ पर चित्त एकाग्र होकर लगजाय फिर वह सुलभ हो जाती है। अपनी शक्ति को कभी कम करके न मानना चाहिये। मनुष्य का जन्म भावना ही से होता है, ऐसे ही जाति भी दृढ़ विचार

से उत्पन्न होती है। हम जो कुछ भारतवर्ष के बारे में सोचेंगे वह वैसा ही हो जायगा। यदि हम सोचने लगें कि हमारा देश निर्धन, निर्बल, निर्बुद्धि और नीच है, तो यह वैसाही हो जायगा; परन्तु यदि हम यह सोचते रहें कि हमारा भारतवर्ष पहले प्रतापी, प्रतिभाशाली और प्रभावपूर्ण था, अब है और ऐसा ही-अपने पिछले गौरव से भी बहुत ज्यादा गौरवपूर्ण-भविष्य में होगा, यह अतुल बलशाली है और होगा, इसका धर्म संसार में अजेय है, इसमें बड़े बड़े राजनीतिज्ञ, बड़े बड़े शासक, बड़े बड़े योद्धा, बड़े बड़े कर्मवीर और बड़े बड़े विद्वान हो गये हैं, वर्तमान हैं और होंगे, और यदि हम अपने देश को भारत माता और देश-भक्ति को अपना धर्म समझ कर इसकी आराधना करें और इसके लिये सभी प्रकार से उचित और नियमबद्ध उद्योग करें, तो निश्चय जानिये हमें सफलता मिलेगी और स्वराज्य प्राप्त होगा।

इस लक्ष्य—भारत में पूर्ण स्वराज्य—प्राप्त करने के लिये हमें भरपूर संगठन की आवश्यकता है। सब भारतवासियों में अटूट प्रेम और ऐक्य की आवश्यकता है। शक्ति एक में मिलकर काम करने से रहती है। अलग अलग रहने से शत्रु को हमारी कमज़ोरियों पर हँसने और उससे लाभ उठाने का अवसर मिल जाता है। दूसरी आवश्यकता यह है कि हम लोग अत्यन्त शान्तिरूप से अहिंसात्मक बनकर कार्य करें। कार्य में रुकावट पड़ने पर भी समता से काम लें। कांग्रेस के आदेशानुसार हमें सदा शान्तिपूर्वक कार्य करने पर तैयार रहना चाहिये। एक नेता या प्रचारक के पकड़े जाने पर चार नेता और प्रचारक उसका स्थान लेने को उद्यत हो जाने चाहिये। हमारी शक्ति धर्म में है और हम न्याय के पक्ष पर हैं। हम केवल

उसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये अपनी सारी शक्ति का आवाहन करना चाहते हैं, जो हमें जन्म से प्राप्त है और जिससे हम इतने दिनों तक वंचित रक्खे गये हैं। हमारी शक्ति एकता, क्षमता और धैर्य में है।

हमको अपने कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये इस समय अत्यन्त शान्ति, ठण्ढे साहस, सत्यता, निर्भीकता, धैर्य और उद्योग से कार्य करना चाहिये। नम्रता और प्रेम हमारे भूषण बनने चाहियें। स्वार्थ-त्याग कर भारत-माता की सेवा के लिये अत्यन्त निडरता और सत्यता से कार्य करने की आवश्यकता है। परन्तु निडरता के अर्थ में उद्दंडता तथा हिंसा का प्रयोग कभी भी न होना चाहिये। हमारा तो धर्म-युद्ध है। हमें सत्यपथ पर रहना है। सत्य ही से हमें जय मिलेगी। हमें अपनी आत्मिक शक्ति में विश्वास रखकर अपने पैरों पर खड़े हो जाना चाहिये और बिना विजयप्राप्ति किये पैर पीछे न हटाना चाहिये। रुकावटें स्वयं स्थान दे देंगी।

हमारी अन्तिम विजय। हमें सदा पूरी आशा और विश्वास रखना चाहिये कि अन्तिम विजय हमारी होगी। हमें स्वराज्य प्राप्त होगा। हमारे इस निर्दिष्ट पथ से हमें कोई नहीं डिगा सकता। जिस लक्ष्य को प्राप्ति के लिये आज ३२ करोड़ भारत-वासी तुले हुए हैं उसे संसार की कोई शक्ति भी रोक नहीं सकती। तोप, गोले, बारूद, सेना, पुलिस, जहाज और हवाई जहाज इत्यादि ये सब साधन सांसारिक विजय के लिये हैं। आत्मिक युद्ध में विजय इनके साथ नहीं है। नौकरशाही के ये सब अस्त्र शस्त्र निरर्थक हो जाँयगे और उसे अपनी हार माननी पड़ेगी। घमंडी का शिर सदा नीचा रहता है।

हमें अपनी शक्ति और संगठन में पूरा विश्वास है। हम अपने आत्मिक बल से सत्य और न्याय की रक्षा के लिये धर्म-युद्ध लड़ रहे हैं। विजय हमारी होगी, इसमें किंचित मात्र भी सन्देह नहीं है। हमारी विजय भी साधारण विजय न होगी; इस विजय की समता संसार के इतिहास में कहीं भी नहीं मिल सकेगी। यह अपूर्व और अद्वितीय विजय होगी। अपने में, अपने देश में और परमेश्वर में विश्वास रखिये और उत्साह को न छोड़िये। भारतवर्ष को स्वाधीन देश के रूप में देखिये और फिर भारत-माता के स्वाधीन होने में कुछ देर न लगेगी। परमात्मा का नाम स्मरण कर हमें सत्यपथ पर कर्तव्य-निष्ठ होना चाहिये और सदा अपनी विजय और स्वराज्य-प्राप्ति में विश्वास रखना चाहिये।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।



क्या बाक़ी है ?



न देर जोशे शुजाअत में यार बाक़ी है।
ख़ुदा के हुक्म का बस इन्तिज़ार बाक़ी है॥

जफ़ा उधर से अगर बेशुमार बाक़ी है।
इधर भी दिल में अभी इख़्तियार बाक़ी है॥

ख़िलाफ़े अदल न हो ऐ ख़िलाफ़े दाद गिरी।
वह देख, तेग़े सदाक़त में धार बाक़ी है॥

गुलों को चुन लिया बुलबुल को भी असीर किया।
यह वह चमन है कि, फिर भी बहार बाक़ी है॥

ख़ुदा करे चलें बादे ख़िज़ाँ के वे झोंके।
मिटे जो बाग़ में उनके बहार बाक़ी है॥

वे हम पर ज़ुल्म करें बेहिसाब ऐ अंजुम।
हिसाब के लिये रोज़े शुमार बाक़ी है॥

सैय्यद मेहरबान अली 'अंजुम'।





'हिन्दी-पुस्तक-माला' के

नियम।

१—'प्रवेश शुल्क' ॥) देने से प्रत्येक सज्जन इस 'माला' के स्थायी ग्राहक बन सकते हैं।

२—स्थायी ग्राहकों को 'माला' की सभी पुस्तकें—पहले की प्रकाशित और आगे प्रकाशित होने वाली—पौनी कीमत पर दी जाती हैं।

३—पहले के प्रकाशित पुस्तकों को लेना न लेना ग्राहकों की इच्छा पर निर्भर है, परन्तु ग्राहक होने के बाद, आगे निकलने वाली सभी पुस्तकें उन्हें अवश्य लेनी पड़ती हैं।

४—वर्ष भर में कम से कम ५) रु० मूल्य (पूरी कीमत) की नई पुस्तकें तो प्रत्येक स्थायी ग्राहक को अवश्य ही लेनी होती हैं। किन्तु ५) से अधिक की पुस्तक निकलने पर, वर्ष में ५) की पुस्तकें लेकर शेष पुस्तकों के लिये ग्राहक इन्कार कर सकते हैं। किसी उचित कारण के बिना यदि किसी पुस्तक का वी० पी० वापस आता है तो उसका डांक खर्च आदि ग्राहक को देना होता है। अधिक से अधिक दो वी० पी० वापस कर देने वालों का नाम ग्राहक श्रेणी से अलग कर दिया जाता है।

५—पुस्तक प्रकाशित होने के एक सप्ताह पहले कार्ड द्वारा पुस्तक के विषय, मूल्य आदि से स्थायी ग्राहक को सूचित कर दिया जाता है, पश्चात् वी० पी० भेजा जाता है।

६—'प्रवेश शुल्क' के ॥) पेशगी 'मनीआर्डर' से भेजना चाहिये।

७—स्थायी ग्राहक, 'माला' के पुस्तकों की चाहे जितनी प्रतियां जितनी बार चाहें 'पौनी' कीमत में ही मगा सकते हैं। किन्तु १०) से अधिक मूल्य की पुस्तक मँगाने पर चौथाई रुपये पेशगी भेजने होते हैं, जो वी० पी० में मुजरा कर दिये जाते हैं।

८—ग्राहकता छोड़ते समय जमा किया हुआ 'प्रवेश शुल्क' ॥) वापस कर दिये जाते हैं। किन्तु, उस समय वापस नहीं किये जाते, जब कि कोई वी० पी० लौटा दी गई हो।

सब प्रकार के पत्र व्यवहार का पता—

व्यवस्थापक,—"हिन्दी ग्रन्थ भण्डार, कार्यालय"

नई सड़क, बनारस सिटी।

हिन्दी-पुस्तक-माला।



हिन्दी साहित्य को अच्छे २ ग्रन्थ रत्नों से सुशोभित करने के लिये ही इस 'माला' की सृष्टि की गई है। पुस्तकों का चुनाव और सम्पादन बड़े विचार के साथ किया जाता है। इसके लेखक हिन्दी के नामी नामी विद्वान हैं। छपाई सफ़ाई पर विशेष ध्यान रक्खा जाता है।

अबतक नीचे लिखी पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं।

१--चित्राधार--हिन्दी के प्रसिद्ध भावुक कवि श्रीयुत बाबू जयशङ्कर 'प्रसाद' लिखित-और सरस्वती, चित्रमयजगत, प्रभा, भारतोदय, शिक्षा, नागरी प्रचारक, हिन्दी बङ्गवासी, मनोरञ्जन और मर्यादा प्रभृति द्वारा प्रशंसित—१० पुस्तकों का अपूर्व संग्रह। जो, कविता, नाटक, गल्प इतिहास आदि विविध ज्ञातव्य विषयों से पूर्ण है। मूल्य १॥)

२--प्रबन्ध-पूर्णिमा--सम्पादक, बा० अम्बिकाप्रसाद गुप्त। इसमें १५ प्रबन्धों का संग्रह है। जो भारत के भावी सन्तानों को योग्य नागरिक बनाने के लिये पूर्ण सहायक है। लेखकों में हैं, परिव्राजक स्वामी सत्यदेव जी, बाबू श्रीप्रकाश बी० ए०, बारिस्टर एट-ला, प्रो० महेशचरणसिंह बी० ए०, एम० एस० सी०, एम० ए० एल० एस० [लंडन] अखौरी कृष्णप्रकाशसिंह बी० ए०. एल-एल० बी०, पं० पाटेश्वरीप्रसाद

त्रिपाठी बी० ए०, पं० कृष्णविहारी मिश्र बी० ए०, एल-एल० बी०, ठा० शिवनन्दनसिंह बी० ए०, बा० नारायणसिंह बी० ए० प्रभृति। प्रारंभ में तिलक महाराज का एक दर्शनीय चित्र है। (मूल्य १)

३-चोट—लेखक, श्रीयुत आनादिधन वन्द्योपाध्याय बी० ए०। इसमें आनन्द और राष्ट्रीय भावके साथ २ हृदय पर अपूर्व चोट पहुंचाने वाले ११ ऐसे गल्प हैं जिन्हें अवलोकन कर सहसा आप भूल न सकेंगे। देशकी दशा भी सामने होगी। २ चित्र भी हैं। मूल्य ॥।=)

४-विशाख—राजतरंगिणी की एक ऐतिहासिक घटना के आधार पर लिखित एक मनोरम नाटक। इसका उद्देश्य है जातीय आदर्शों को स्थापित करते हुए देशभक्ति के भावों को उन्नत करना। लेखक बाबू जयशङ्कर 'प्रसाद'। इसमें सभ्यजनोचित हास्य का भी खूब समावेश है। मूल्य है ॥।)

५-झरना--एक भावपूर्ण कविता पुस्तक। लेखक, वही बाबू जयशङ्कर 'प्रसाद'। मूल्य ।-)

६-जंगली रानी--प्रजातन्त्र राज्य का निदर्शक एक सुन्दर गल्प। लेखक, श्रीयुत इन्द्रनारायण त्रिपाठी। इस गल्प के लिखनेके उपलक्षमें लेखकको एक 'स्वर्णपदक' मिला है। मूल्य ≈)

७-विदीर्णहृदया लता--चित्ताकर्षक एक ऐतिहासिक गल्प। लेखक, श्रीयुत पं० रुद्रदत्त भट्ट। इस गल्प के लिये लेखक को एक 'रौप्य पदक' मिला है। मूल्य =)

८-बलिदान--यह भी एक बड़ा भावपूर्ण गल्प है जिसके लिखने के उपलक्ष में इसके लेखक को भी एक 'रौप्य पदक'

मिला है। लेखक हैं—असौरी कृष्ण प्रकाशसिंह बी० ए० एल०एल० बी०। मूल्य है ≡)

९-*लिली*—यह भी एक गल्प पुस्तक है, युद्ध घटना के आधार पर लिखित है; रौप्य-पदक प्राप्त है। लेखक हैं, श्रीयुत गोविन्दवल्लभ पन्त। मूल्य ≡)

१०-*हृदयदान*-यह, एक शिक्षाप्रद सामाजिक गल्प, है। लेखक हैं श्रीयुत मुकुटधर पाण्डेय। मू० ≡)

११-*पुष्पहार*—हिन्दी साहित्य के चिरपरिचित प्रसिद्ध गल्प लेखक, बाबू प्यारेलाल गुप्त प्रणीत अनुपम सुषमा-मण्डित ९ गल्पों का एक मनोहर संग्रह। मंगाकर मन प्राण सुखी कीजिये। इसमें भावपूर्ण ४ सुन्दर चित्र भी हैं। मूल्य सुन्दर जिल्द से बँधा १॥।) अजिल्द १।)

शीघ्रही प्रकाशित होने वाली पुस्तकें

१२—सप्तर्षि
१३—पत्नी का पत्र
१४—लेनिन
१५—शेर पंजा
१६—गाँधी-वाद
१७—गजरा
१८—समविभ्राट
१९—प्रजासत्तात्मक राज्य

आगे, और किन २ विद्वानों की लिखी पुस्तकें प्रकाशित होंगी-

श्रीयुत पं० कृष्णविहारी मिश्र, बी० ए०, एल० एल० बी०
" असौरी कृष्णप्रकाशसिंह बी० ए०, एल० एल० बी०,
" बाबू जयशङ्करप्रसाद "प्रसाद"
" पं० चन्द्रमनोहर मिश्र बी० ए०, एल० एल० बी०,
" बाबू रामनाथ सेठ एम० ए०, एल० एल० बी०
" बाबू प्यारेलाल गुप्त

श्रीयुत ठा० शिवनन्दनसिंह, बी० ए०
" ठा० कल्याणसिंह शेखावत, बी० ए०
" बाबू रामचन्द्र बी० एस-सी०
" पं० गोविन्दवल्लभ पन्त
" शिवदास गुप्त 'कुसुम' सम्पादक 'युगान्तर'
" बाबू नारायणप्रसाद बी० ए०
" बाबू चन्डीप्रसाद बी० ए० 'हृदयेश
" पं० मुकुटधर पाण्डेय
" पं० रुद्रदत्त भट्ट
" बाबू शिवदानप्रसादसिंह बी० ए०
" कुंवर राजेन्द्रसिंह
" 'प्रेमी'

सूचना—जिल्द बँधवाने का खर्च बहुत अधिक बढ़ गया है। इस लिये हम सजिल्द पुस्तकें केवल उन्हीं को भेजते हैं, जो इसके लिये खास सूचना देते हैं। उस हालत में प्रति जिल्ददार पुस्तक—बड़ी छोटी के अनुसार—पर ।=) या ॥) मूल्य अधिक हो जाता है।

विनीत—

व्यवस्थापक—"हिन्दी-ग्रन्थ-भंडार" कार्यालय

नईसड़क, बनारस सिटी।

हिन्दी-गल्प-माला ।



सामाजिक, शिक्षाप्रद देशहित और हास्यरस गल्पों से

पूर्ण मासिक पत्र ।



प्रति मास ठीक पहली तारीख को प्रकाशित हो जाने वाली, गल्पों की यह बहुत सुन्दर मासिक पत्रिका है। यह प्रतिमास सामाजिक, शिक्षाप्रद, देशहित और हास्यरस गल्पों से पूर्ण रहती है। वर्ष में ५०० पेज से भी अधिक पृष्ठों की एक बहुत मोटी पुस्तक हो जाती है। हिन्दी में इसकी आवश्यकता और उपयोगिता को बताते हुए 'आज' 'अभ्युदय' 'सरस्वती' 'श्रीवेंकटेश्वर समाचार' 'ललिता' और 'चित्रमयजगत' आदि पत्रों के सम्पादक महानुभावों ने इसकी बड़ी प्रशंसा की है।

इसका उद्देश्य है, संसार के सभी प्रश्नों को गल्प रूप में पाठकों के सन्मुख उपस्थित करना। ग्राहक होकर आप भी सुखी होंगे। वार्षिक मूल्य कुल २॥) है। एक अंक का है, ।) आना।

व्यवस्थापक—'हिन्दी-गल्प-माला कार्यालय.

बनारस सिटी।

ग्राहकों के लिये विशेष सुविधा।



हम, अपनी "हिन्दी-पुस्तक-माला" के अतिरिक्त, हिन्दी पाठकों की सुविधा के लिये, उनकी माँग पर, काशी के तथा भारत के अन्य पुस्तक प्रकाशकों की भी, सभी चुनी चुनी पुस्तकें भेजा करते हैं।

बड़ा सूचीपत्र मंगा देखिये।

व्यवस्थापक—

पता—हिन्दी-ग्रन्थ-भंडार कार्यालय

नई सड़क, बनारस सिटी।

आदर्श प्रेस, रामसागर, काशी।

आपके दांतोंके बीच में लगे हुए दिखाई देते हैं । २६-२७

जिस प्रकार नदियोंकी बड़ी धाराएँ समुद्रकी ओर दौड़ती हैं उस प्रकार आपके धधकते हुए मुखमें ये लोकनायक प्रवेश कर रहे हैं । २८

जलते हुए दीपकमें जैसे पतंग बढ़ते हुए वेगसे पड़ते हैं, वैसे ही आपके मुखमें भी सब लोग बढ़ते हुए वेगसे प्रवेश कर रहे हैं । २९

सब लोकोंको सब ओरसे निगलकर आप अपने धधकते हुए मुखसे चाट रहे हैं । हे सर्वव्यापी विष्णु ! आपका उग्र प्रकाश समूचे जगतको तेजसे पूरित कर रहा है और तपा रहा है । ३०

उग्ररूप आप कौन हैं सो मुझसे कहिए । हे देव-वर ! आप प्रसन्न होइए । आप जो आदि कारण हैं उन्हें मैं जानना चाहता हूं । आपकी प्रवृत्ति मैं नहीं जानता । ३१

श्रीभगवान बोले—

लोकोंका नाश करनेवाला, बढ़ा हुआ मैं काल हूं । लोकोंका नाश करनेके लिए यहां आया हूं । प्रत्येक सेनामें जो ये सब योद्धा आये हुए हैं उनमेंसे कोई तेरे लड़नेसे इनकार करनेपर भी बचनेवाला नहीं है । ३२